शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 16 | उदयपुर शुक्रवार 15 सितम्बर 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

मां, नानपण और नई बहू के लिए टॉयलेट

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

जीवन में कई ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनका कोई अर्थ नहीं लिया जाता किंतु बहुत गंभीर और गहराई से यदि मनन किया जाय तो वे व्यर्थ समझी जाने वाली घटनाएं भी बड़ी महत्वपूर्ण तथा उपादेय लगने लगती हैं। इसके पीछे बड़ा धैर्य रखना पड़ता है। मन को बहुत पीछे ले जाना पड़ता है और चारों ओर से सूत्र मिलाने पड़ते हैं पर जब कोई सूत्रधार ही नहीं हो और उन सूत्रों की टोह लेने वाला भी सूझबूझ का धनी नहीं हो तब ऐसी अनेक अच्छी तथा मूल्यपरक बातों, कथाओं, अख्यानों तथा आड़ियों से हाथ धोना पड़ता है। संसार का यह क्रम बड़ा उलझनभरा, रहस्यदबा तथा अंधेरे में से रोशनी खींच लाने जैसा है।

ऐसे में मुझे अपना ही परिवार याद आता है। सन् 1937 में जन्म लेकर 1952 में मैंने अपना गांव छोड़ दिया था। इस काल की छोटी उम्र की स्मृतियां बटोरने पर मुझे लगता है, वे इतनी लड़ालूम हैं कि मैं उन्हें बटोरता ही रहूं जैसे नन्हे हाथों की उंगलियों से कोई बालक विशाल फैले खेत से पौधे उखाड़-उखाड़ मूंगफलियां बटोरता आनंदातिरेक बावला बना रहता है। इन पौधों की खासियत यह है कि इनका फल खेत के अंदर लगता है जिसकी पहचान कोई समझाबुझा ही कर सकता है। मूंगफलियां तो सबने देखीं मगर वे तत्काल की उखाड़ी हो और फिर उनके छिलके के भीतर से जो गुलाबी आभा लिये दाना निकलता है उसकी खुशबू और उसका स्वाद जिसने भी चखा है वह शब्द परे है। अर्थ परे है। व्याख्या परे है। खाने वाला, चखने वाला भी उसकी चखस को विखोलित नहीं कर सकता।

सो देखा तो केवल घना अंधेरा। उमड़ता-घुमड़ता, इठलाता अंधेरा। अभागे का मां के वैधव्य का अंधेरा। उसके गौरवर्ण को आवृत करते गाढ़े काले कपड़ों का अंधेरा। अंधेरे गुप्प ओवरे का अंधेरा। अनाथ होने का अंधेरा। नानपणे का अंधेरा। एक ही पिरोल में आमने-सामने रह रही विधवा जीवन की कठोर व्यर्थताओं का अंधेरा। अर्थाभाव का अंधेरा। नर विहीन नार का अंधेरा। बेरे माऊ की आंखों के अश्रुपात का अंधेरा। मौत-दर-मौत का अंधेरा। विधवाओं के बंधन का अंधेरा। समाज के थोथेपन का अंधेरा। चंवरी के धुंए से अंधी बनी बुआ का अंधेरा।

ऐसे घुटन देते अंधेरों के दिन ही नहीं, रातें भी अंधी गलियों के आंख फोड़ू सपने देती रहीं। दुख कोई नहीं चाहता मगर कईबार दुखों का अम्बार जबर्दस्ती बरस पड़ता है। धीरज और संतोष ही तब एकमात्र उपाय होता है जब दुख का कटाव धीरे-धीरे कम होता जाता है। ऐसा भी होता है जब सुख की घड़ी उम्मीद की चुटकी में भी नहीं आ पाती है।

नब्बे पार बड़ी बहिन सोवन जीजां ने बताया कि पांचवी संतान के रूप में भाई साहब ने जन्म लिया। पिछली चार घटनाएं मां का पीछा पकड़े हुई थीं। लड़का जीवित नहीं रहने के कारण यह बात फैलाई गई कि लड़की ने जन्म लिया है। उसे छिपाकर अछन-अछन रखा गया। बोलमा के अनुसार उदयपुर से अंबामाता की चांदी की छोटी सी नथ मंगाकर नाक में पहनाई गई। मां पहलीबार तेरापंथी नोहरे में महाराज के दर्शनार्थ ले गई। संत ने नथ पहने बालक को देख कहा, यह तो नथमल है। नाम पूछने पर मां बोली, अंदाता अभी तो कोई नाम नहीं रखा है। आपने नथमल कहा सो यही नाम सही। उन दिनों यह नाम प्रचलन में नहीं था सो सबने नाथू कहना शुरू कर दिया। बाद में जब नाथूराम द्वारा महात्मा गांधी की हत्या कर दी गई तो भाई साहब ने अपना नाम नाथू से नरेन्द्र और मेरा मीठू से महेन्द्र कर दिया।

जीजां ने बताया कि भाई साहब का जन्म परिवार में एक नई रौनक, नई रोशनी, नई हवा और नई रंगीनी लेकर आया। अपार खुशी तथा चहलपहल में पुराने गम अतीत के धुंधलके में जैसे दफन हो गये। मां के लिए सबसे बड़ा धन उसकी संतान थी। भाई साहब से पूर्व वह अपने चार बच्चों को खो चुकी थी। पहला सात वर्ष, दूसरा चार माह, तीसरा डेढ़ वर्ष ही जी पाया। चौथे का गम तो उसे आजीवन ही बना रहा। गर्भावस्था में मां शौच के लिए ढूंढे गई तब गडूरे को भगाने के लिए पत्थर फैंका। उस समय अधिक झुकने के कारण गर्भस्थ शिशु की जीवन-शक्ति जाती रही।

पं. उदय जैन ने स्कूल खोला पर लड़के कहां से लायें। खाते-पीते परिवार वाले अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजना चाहते थे सो जैन साबह ने अभावग्रस्त महिलाओं को टटोला और कहा, बच्चों को पढ़ने भेजो। उनका जीवन सुधर जायेगा और वे पूरे परिवार को संभालने लायक बन जायेंगे। मेरी माताजी अच्छी समझू थी। उसे उनकी बात लग गई सो नरेन्द्र भाई साहब को स्कूल भेज दिया। भाग्य खुलता है तो कमल के फूल की तरह खिलता है और जब अस्त होता है तो जमीन में गड़े उस धन की तरह होता है जिसके निकालने पर कोयला हाथ लगता है।

9वीं-10वीं भाई साहब गुरुकुल छोटीसादड़ी पढ़े। वहां पं. शोभाचंदजी हिंदी अध्यापक थे। उनसे भाई साहब बड़े प्रभावित हुए। कविता, कहानी, निबंध, वाद-विवाद, अंत्याक्षरी आदि जो भी प्रतियोगिताएं होतीं, भाई साहब सदैव अव्वल रहते सो पंडितजी उन पर बड़े खुश थे। अत: उन्होंने मन ही मन उनके साथ अपनी बहिन शांता का रिश्ता तय करने का सोच भाई साहब को पत्र लिख दिया। मां ने कहा, तुम खुश तो सभी खुश। परिवार में और कौन है जिससे राय ली जाय। 7 फरवरी 1956 को शादी हुई। चंवरी में एक हाथ लंबा घूंघट देख भाई साहब से रहा नहीं गया। बोले- पंडित साहब, यह मैं क्या देख रहा हूं। पंडितजी उनके इशारे को समझ गये। उन्होंने विवाह-पंडित और महिलाओं से कहा, जैसा ये कहें वैसा ही हो। देखते-देखते घूंघट हट गया। दरअसल भाई साहब पहले ही लिख चुके थे कि विवाह दहेज मुक्त, घूंघट मुक्त होगा। उस समय की यह बहुत बड़ी क्रांति थी। भाभीजी स्वयं भी इन्हीं खयालों की थीं कि सादगीमय जीवन हो। पर्दाप्रथा नहीं हो। आभूषणप्रियता कम से कम हो।

कानोड़ के पास डूंगला में रह रहे मासी के पांचों बेटों ने भाई साहब के विवाह की रौनक ही बढ़ा दी। सभी एक से बढ़कर एक हैसियत के समाजभूषण थे। विवाहोपरांत वींदगोठ के पश्चात उन्होंने अपने सजेधजे रूणकझुणक छमछमाहट देते ऊंटों पर जैसी बनौली निकाली वैसी उसके बाद आज तक नहीं देखी गई। पूरे गांव में चर्चा फैली कि नाथू का भाग्य देखो जिसने जन्म लेकर अपने परिवार को ही उजलास नहीं दिया बल्कि पूरे गांव को भी रोशन कर दिया। मां के साथ मासी की जैजैकार होने लगी और पूरे गांववालों ने मां डेलूबाई को मासी के नाम के साथ जोड़ दिया। तब से आज तक उस पूरे चौखले में माताजी 'डेलूमासी' के नाम से ही जानी गई। यह नाम आज भी उनकी-हमारी पहचान देता है।

नई बहू के लिए मां ने सर्वाधिक महत्व का काम यह किया कि ढालिये के पास एक कोने में टॉयलेट बनवाई। तब किसी घर में टॉयलेट नहीं थी। महिलाओं ने ताना देना शुरू कर दिया कि ऐसा घर पहलीबार देखने में आ रहा है जहां सास घूंघट में और बहू खुले मुंह में है। जहां सास अंगूठा छाप और बहू पढ़ीलिखी है। ऐसी कौनसी हीरकनी बहू आई है जिसके लिए घर में लेट्रिन बनाई गई है।

मां बड़े फौलादी स्वभाव की थी सो सबकुछ आनंदपूर्वक सुनती रहती। उसके घर में नीठ-नीठ नई बहू आई है जो कई भांत की रंग-बिरंगी नई रोशनी लाई है। खुले में शौच का नरक मां स्वयं भुगत चुकी है। वह जानती थी कि जो कुछ कहा जा रहा है वह सच है और वह स्वयं उन सबके साथ इसकी भागीदार रही है पर बहू तो पराई जाई है। उसके आने से सभी को इस परेशानी से मुक्ति मिलेगी। हींजड़ों का दंड फकीरों के माथे क्यों। जो कष्ट मैंने झेले, बहू उसकी भागीदार क्यों बने!

सौ गधे, सौ गायक पर एक तबलची

'सौ गधों की मौत होती है तब एक गायक पैदा होता है और सौ गायक मरते हैं तब कहीं एक तबलची पैदा होता है।'

यों हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ विशेषताएं लिये होता है मगर जो विशिष्ट, अति विशिष्ट होते हैं उनका नाम होता है। उनका काम बोलता है तो नाम डोलता है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि भारतीय लोककला मंडल में रहते मेरी कई बड़ी-बड़ी हस्तियों से भेंट हुई। संग्रहालय से जुड़ा मेरा कक्ष होने से कभी-कभी संग्रहालय देखने वाले मेरे छोटे से कमरे का आकर्षक डिजाइन वाला पर्दा इधर-उधर कर मुझे भी दरसाव दे जाते तब मैं अपने को संग्रहालय का एक संग्रहणीय व्यक्ति मानकर बड़ा प्रसन्न होता। कभी-कभी देवीलाल सामर किसी विशिष्ट व्यक्ति को संग्रहालय बताते] मुझे याद करते और उन विशिष्ट सज्जन से मेरी भेंट कराते। ऐसा भी होता जब कोई व्यक्ति मुझसे मिलने मेरे कक्ष में ही दस्तक दे जाता। ऐसे अवसर पाकर मैंने कई नामधारी व्यक्तियों से भेंट की और उन्हें संग्रहालय का निरीक्षण भी करवाया।

इनमें कुछ नामों में जनरल के. एक. करिअप्पा, काका कालेलकर, दिनेशनंदिनी डालमिया, वेरियर एलविन, जगदीशचन्द्र माथुर का नाम अभी जबान पर है। एक करंदीकर थे जो प्रख्यात नृत्यकार उदयशंकर की मंडली के प्रमुख वादक थे। वे दो-तीन दिन रहे सो मेरे से खूब घुलमिल गये। उनसे खूब चर्चा होती रही। वे छोटे कद के बड़े व्यक्ति थे। एक सिराली भी थे जो उदयशंकर के साथ विश्व-भ्रमण कर चुके थे। उनसे भी मेरी भेंट खूब हुई।

करंदीकर सामरजी से मिलने आये। सामरजी भी उदयशंकर के साथ रहे। कल्पना नामक फिल्म में उनके साथ काम किया और उदयशंकर को लोकनृत्य भी सिखाये। वह नौ जुलाई 1976 का दिन था जब करंदीकर से बड़ी देर तक गपशप हुई। वे नौ वाद्य एकसाथ बजाते। स्फूर्ति में बेजोड़ थे। दोनों हाथों के साथ दोनों पांव भी वाद्य वादन में दक्ष थे। उनकी बातों में गप्पड़शंख शब्द बार-बार लक्षित होता। वे अपनी बात को बड़े संस्मरणीय कथन में विशेष अदाओं के साथ सुनाते। उदयशंकर की खास-खास बातें बताने में उन्होंने स्वयं तो पूरा रस लिया ही, मुझे भी भरपूर रस दिया। नौ तबले एक साथ बजाने की बात मैंने मगरमच्छ की तरह पकड़ ली। उन्होंने बड़ी अदाओं के साथ उन सभी वाद्यों की सजावट के बीच उनके साथ बैठने की मुद्राओं और बजाने के अन्दाज को बड़ी बारीकी से व्यक्त किया। मैंने उनकी बात पकड़ते पूछा कि गायक के साथ यदि बाजा न हो और बाजे के साथ यदि गायक न हो तो कैसा लगता है और दोनों में आप बड़ा किसे मानते हैं? प्रश्न की जगह प्रश्न कभी ऐंडाबेंडा भी होता है पर कभी-कभी बड़े मार्के का भी होता है सो गजानन विष्णु करंदीकर बड़े विचार में पड़ गये मगर घाट-घाट का पानी लिये-पिये हुए थे और प्रमुख साजकार थे सो चुकने वाले नहीं थे। बड़ा सटीक उत्तर देते वे बोले- 'सौ गधों की मौत होती है तब एक गायक पैदा होता है और सौ गायक मरते हैं तब कहीं एक तबलची पैदा होता है।'

स्मृतियों के शिखर (37) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रेत की लहरों पर अटकी लोकसंगीत की मटकी (2)

जैसलमेर की आशातीत उपलब्धि से हमें यह प्रेरणा मिली कि इसी प्रकार का एक समारोह बाड़मेर में 18, 19 तथा 20 मार्च 1974 को किया गया। इसमें राजस्थान संगीत नाटक अकादमी की सचिव सुधा राजहंस तथा कलामंडल से मैंने अपनी-अपनी रेकार्डिंग यूनिट के साथ भाग लिया। इसबार तीनों दिन उन कलाकारों का भी आना-जाना बना रहा जो अ-निमंत्रित थे।

जब उनसे पूछा गया तो बोले- 'अब आप ही हमारे माई-बाप और जजमान हो। आप चाहे बुलावो या मत बुलावो। हम तो आयेंगे ही आयेंगे।' लगभग 27 गांवों के सौ कलावन्तों का रेकार्डिंग किया गया। कुल रेकार्डिंग लगभग 8 घंटे का हुआ। प्रत्येक आनेवाले कलाकार से उसकी गायकी तथा घराने के संबंध में पूछा गया। अपनी पांच-पांच, छह-छह पीढ़ियां तो प्रत्येक को याद थीं। कुछ ने तो अपनी नौ-नौ पीढ़ियां तक गिना दीं। नग्गा पिता आसा मांगणियार, गांव लूर, पो. जालीपा, तहसील बाड़मेर ने बताया कि उनकी उत्पत्ति राजपूतों से हई। उसने अपनी वंशावली इस प्रकार कही- आसा-आईदान-जम्मा-मेहरा-रामजी-केसरा-दईदान-भारमल-नादा। सभी लोग गाने-बजाने का काम करते थे।

साठ वर्षीय आसा पिता लांगा, गांव हडुवा, पो. गूंगा, तहसील सिव ने बताया कि प्रारंभ में वे लोग हिन्दू थे। हजरत इब्राहीम के समय में मुसलमान बना दिये गये। आज भी उनके सारे रीति-रिवाज हिन्दुओं में से हैं मगर धर्म मुसलमान का पाला जाता है। इनकी वंशावलियों से पता चलता है कि इनमें से बहुत से नाम हिन्दू नामों से मिलते हुए हैं। यथा-

(क) बागा पिता हीरा मांगणियार। पो. बेसड़ा, त. पोकरण। हीरा-सदा-मदरु-जेठा-भागू-जोधा-हगता।

(ख) भंवरा पिता सुरताण। पो. बिसाला, त. बाड़मेर। सुरताण-लाधा-पीरो-अजबो-गोरधन-जलाल-राधो।

(ग) सादी पिता कादरा। गांव बीसू, पो. बीसूकलास। कादरा-नबा-मदरूप-पंचाण-काना-राजा-जोगो।

(घ) राणा पिता हिंदाल। पो. चोवटण, त. चोवटण। हिंदाल-भानो-हरूपो-सुमार-जुगतो-नरोजी-बासो-अजो।

ये मांगणियार दबे-खुले में मिरासी, दमामी, मीर, डूम, राणा, भांड आदि नामों से भी जाने जाते हैं। इनमें अधिकतर लोग कमायचा बजाते हैं। कुछ लोग सतारा तथा मोरचंग बजाते हैं। थूबली गांव, पो. नीमला, त. सिव का सच्चू पिता बुलो अपने साथ श्रीमंडल लेकर आया। यह बत्तीस तार का बाजा होता है।

इसका घेरा रोईड़े की लकड़ी का बना होता है। बत्तीस मोरड़े होते हैं जो शीशम के बने होते हैं। नीचे वाला हिस्सा जिस पर से तार निकलते हैं, घोड़नो कहलाता है। जो तार सीधा जाता है उसे झारा कहते हैं अन्य सारे तार थाट कहलाते हैं।

सच्चू के कहे अनुसार उसके दादाजी श्रीमंडल बजाया करते थे परन्तु वह टूट गया। उसके देखा-देख अपना बाजा उन्होंने स्वयं ने बनाया और बजाना सीखा। प्राय: ये लोग राठौड़ राजपूतों तथा महाजनों के याचक हैं परन्तु अब इन्हें दर्जी, सुथार, माली, जोशी, कुमार, खवास से भी अपनी आजीविका चलाने के लिए मजबूर होना पड़ गया है।

सोनेरिया, बेद, गुणसार, देधड़ा, डगा, कासी, सीधर,धोली, जीणा, बोदर, खड़ेरा, देसाल, बरणा, बाबर, कालूंभार, कालेठ, कटु, भेट, सीपा, बबी, मोनसी, सीदर, गेला, रामटा, पुश्या, खालवेश आदि इनकी खापें हैं।

सत्तर वर्षीय कादरा ने बताया कि प्रारंभ में कटु, भेट कालेठ ये तीन ही खांपें थीं। बहादुरखां ने कहा कि प्राय: कर्म के अनुसार इन खांपों का इतना विस्तार हुआ। जैसे घोड़े पर जीण कसने वाले जीणा, खल डालने वाले खड़ेश, घट्टी पीसने वाले पुरिया, सोने-चांदी का काम करने वाले सोनेरिया, पूजा-पाठ करने वाले बेद तथा गुणी व्यक्ति गुणसार कहलाये। इन्हें मांगनेवाले गड़मंगे होते हैं जो प्राय: विवाह-शादी पर आते हैं। ये लोग केवल बजाते हैं, गाते नहीं हैं।

बाड़मेर, पालनपुर, जैसलमेर, जोधपुर इनके खास ठिकाने हैं। गड़मंगों के अलावा कभी-कभी जोगी, खांसी तथा कूचबंध भी मांगने के लिए आते हैं। प्राय: सभी वाद्य सिंध में बनते हैं। सतारा सुथार लोगों द्वारा सुपारी की लकड़ी से बनाया जाता है।

खालसा वाद्य जिसे वादा भी कहते हैं, मुसलमान बनाते हैं। यह सुपारी की लकड़ी से बनाया जाता है। ये नर व मादा दो वाद्य होते हैं जो एक साथ बजाये जाते हैं। नर पर पैरवे दिये जाते हैं और मादा पर ग्राम बदला जाता है। ये लोग गाना-बजाना प्राय: अपने गुरु के पास रहकर सीखते हैं। इनमें से कइयों के गुरु सिंध में हैं। कुछ लोग मोरचंग जैसा वाद्य बकरियां चराते वक्त स्वयं ही सीख गये हैं।

सिव निवासी सिद्दीक खड़ताल बजाने का अद्वितीय कलाकार है। यह दो लकड़ी के दो टुकड़ों का बना होता है जो दोनों हाथों में दो-दो की संख्या में रखकर उनके आपसी आघात से लय-संगीत सरसाया जाता है। सिद्दीक के अतिरिक्त कूंडा गांव, तहसील फतेगढ़ (जैसलमेर) का नजरा पिता खींरा नामक कलाकार भी इसमें शरीक हुआ।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष के रूप में सामरजी ने लोकसंगीत के ऐसे जगह-जगह समारोह आयोजित किये। इससे पूरे देश में राजस्थानी लोकसंगीत का दबदबा कायम हुआ। मांड गायिका अल्लाजिलाईबाई, गवरीदेवी, नूरमोहम्मद लंगा, भजन गायिका सोहनीदेवी, सिद्दीक जैसे कलाकार जगह-जगह सम्मानित होने लगे। अल्लाजिलाईबाई तथा सिद्दीक को सरकार द्वारा पद्मश्री से नवाजा गया।

पदम्श्री होने के बाद जब सिद्दीक को कलामंडल आमंत्रित किया गया तो मैंने उन्हें अपने कक्ष में कहा- 'सिद्दीकजी आप खड़े क्यों हैं? खड़ा तो मुझे होना चाहिए आपके स्वागत में। सरकार ने आपका पद्मश्री से बहुमान किया सो अच्छा रहा।'

सिद्दीक भावुक हो बोले, 'लेकिन अपने गांव और यजमानों से छूट गया। अच्छा होता इसके साथ सरकार कुछ वजीफा बांध देती तो परिवार का गुजरबसर ठीक से हो पाता।' तब मैंने सुझाव दिया कि सरकार लोककलाकारों के लिए कोई ऐसा ही अलग तरह का पुरस्कार प्रारंभ करे और उतनी ही बड़ी राशि भी दे ताकि वे गौरव के साथ अपना जीवन जी सकें।

दिखने में सबसे सामान्य और हल्के खड़ताल से सिद्दीक ने सबका ध्यान आकर्षित किया। अपने हाथों को ही नहीं, पूरे शरीर और मुख-आंख की विविध भावी मुद्राओं से जो संगीत लहरियां निकालीं जैसे स्वर्गीय आनंद की सृष्टि में सभी अपनी सुधबुध खो बैठे।

बाद में सिद्दीक को संस्थापक देवीलाल सामर ने कलामंडल में आमंत्रित कर उसकी शानदार प्रस्तुति के साथ जैसलमेर तथा बाड़मेर के संगीत गायकों का समारोह आयोजित किया और उसे लोकासंगीत समारोह नाम दिया।

अरबखां जलतरंग और सितार बजानेवाला एक नामी वादक हुआ। कादरा ने उसको अपना उस्ताद बनाया। इन वाद्यों पर ये लोग सोरठ, सामेरी, बिलावल, सारंग, तोड़ी, गूड़ मलार, खमायची, आसा, भभास, सूब, धानी, प्रभाती, कल्याण, कारेल, मारु, पीलू, राणा, रामगरी, जोग आदि रागें बड़ी तन्मयतापूर्वक गा लेते हैं।

इन रागों के साथ ये लोग बूंदी राजा धरमसी, सबलसिंह, जुगतसिंह तथा गड़सर राजा की भावन, अमरसिंह की कटारी, मजीसा रो सोलो, बाघजी, रिड़मल, डोढ़ो, खमाज तथा करियो, लसकरियो, बना, बनी, अवलू, बधावा, तोरण, पपैयो, भंवरजी, रतन राइका, अंतरियो, कुरजल, पोपटियो, लहरियो, बायरियो, बरसालो, हिचकी आदि गीत गाते हैं। राजपूतों की मृत्यु पर ये लोग मसाण में भी गाते हैं।

मांगणियारों के अलावा बिसाला के राणा पिता माना भांबी से तंदूरे पर भजन, परभाती तथा हरजस टेप किये गये। इन कलाकारों में करणाराम पिता पांचाराम, जैसलमेर ने अपने नड़ वाद्य के साथ भाग लिया। पांचाराम भील है जिसे नायक, थोरी तथा माझी राणा भी कहते हैं। यह वाद्य साची कंगोर वृक्ष की डाली से बनाया जाता है। सिंध, अमरकोट, नोरोढ़ोरो, मीरपुर तथा हैदराबाद में इसे केहरी मुसलमान बजाते हैं। यह बड़ा कठिन फूंक वाद्य है। उधर मुसलमानों की जत्त औरतें भी इसे बजाती हैं। छोटी नड़ को कानी कहते हैं।

सत्तो गांव सम तहसील जैसलमेर से जगन्नाथ पिता राणानाथ स्वामी आया। उन्हें नाथजी, गुसाई व बाबाजी भी कहते हैं। रावल भाटी इनके जजमान हैं।

स्वामी कौन होते हैं और कब से बने पूछने पर उन्होंने बताया कि जब जोरावरसिंह राज कर रहे थे तब उनके पुत्र गुलाबसिंह ने आठ वर्ष की उम्र में ही भजन-कीर्तन प्रारंभ कर दिया। वे स्वामी बने गये और नाथ कहलाये। उनके बाद सारा वंश ही नाथ बन गया। शिवरात्रि पर गुलाबनाथजी की स्मृति में मेला भरता है तब भजनों पर नाच-गान किया जाता है। जगन्नाथ ने अपनी वंशावली इस प्रकार बताई- जोरावरसिंह (राजा) से गुलाबनाथ-चेतननाथ-बिसवानाथ-रूपनाथ-मंगलनाथ-ज्ञाननाथ-हीरानाथ-माननाथ-राणानाथ।

उधर के अन्य कलाकारों में गांव कुंडल, पो. गिराब, त. सिव का शंकरा मेघवाल भजन, हेली, वाणी, फकीरी, दोहे, सवैये तथा आरती, कथा गाने में बड़ा नाम है। बाड़मेर क्षेत्र में घूमर, मटकू, तोईसा तथा गैर नृत्य स्त्रियों में बड़े प्रिय रहे हैं। तोईसा में गरबी प्रकृति के गीत गाये जाते हैं। यथा- घेवरिया बाजै नेवरिया बाजै तथा घूमर का सागर पाणीड़ा ने जाऊं गीत बहुत प्रसिद्ध है। गैर के साथ बादीला डांडिया रमवा जाऊं गीत बहुत चलता है। हडुवा में नगता मेघवाल घड़ा बजाने का तथा केलनूर गांव में सिक्कू भील अच्छा पावा बजाता है। सम तहसील का बसियो म्याजलार औरतों का वेश बनाकर नाचता है।

सीमांत प्रहरी बाड़मेर में प्रथम बार लोकसंगीत की इन रक्षक जातियों का समागम उल्लासकारी घटना थी। संगीत का ऐसा समृद्ध खजाना मरुभूमि के कण-कण में बिखरा हुआ है। आवश्यकता है इन कलाविदों को उचित संरक्षण, प्रतिष्ठा और मार्गदर्शन देने की।

यहां हमने यह महसूस किया कि किसी भी कला और संस्कृति की सही और सच्ची परख यही है कि हम उन कलाकारों के घर-अंचलों में जाकर उनसे हिलेंमिलें और उनके पास जो समृद्ध संपदा है उसका उन्हें और उनके आसपास रहने वालों को बता दें और उनके बीच उन्हें मान-सम्मान और इज्जत-प्रतिष्ठा देकर उनका सही मूल्यांकन करें अन्यथा सच्चे पारखियों के अभाव में इन कला-रूपों की रोड़ियां ही बढ़ती चली जायेंगी।

पुखराज मारू ने की 21 की तपस्या

छोटीसादड़ी में श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के चातुर्मास हेतु बिराजित आचार्य पद्मभूषणजी एवं आचार्य निपूर्णरत्नसूरिजी की प्रेरणा से वरिष्ठ श्रावक पुखराज मारू ने 21 की तपस्या पूर्ण कर पारणा किया। इस अवसर पर चतुर्विध संघ के साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से जुलूस निकाला। प्रभावना का लाभ पुष्पा मारू एवं तपस्वी-परिवार ने लिया। डॉ. सतीश,डॉ. कविता मेहता, सुमित्रा मेहता, गुणबाला, कालूलाल बाबेल, अमृत कंठालिया तथा संघ के अध्यक्ष एवं मंत्री ने तपस्वी मारू का भावभीना अभिनंदन किया। आगन्तुकों का स्वागत-सम्मान धापूबाई, सोनम, अमित तथा मोहित ने किया। इससे पूर्व तपस्वी आवास पर पहुंच कर नगर परिषद अध्यक्ष सुरेन्द्र तम्बोली ने मारू का बहुमान किया।

ललित शर्मा को हल्दीघाटी इतिहास गौरव सम्मान

झालावाड़ के इतिहासकार ललित शर्मा साहित्य, कला एवं संस्कृति परिषद हल्दीघाटी द्वारा हल्दीघाटी इतिहास गौरव सम्मान से नवाजे गये। हल्दीघाटी के महाराणा प्रताप संग्रहालय में आयोजित समारोह में जनार्दनराय नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत तथा राजस्थान साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर ने रजत प्रतीक एवं सम्मानपत्र प्रदान किया।

राजन द्वारा 42,000 पुस्तकें भेंट

साहित्यकार राजकुमार 'राजन' देश के विभिन्न विद्यालयों में पिछले 10 वर्षों से निशुल्क बालसाहित्य विषयक पुस्तकें भेंट करने का कार्य बड़े पैमाने पर कर रहे हैं। अब तक उनके द्वारा 3 लाख 75 हजार रूपये मूल्य से अधिक की पुस्तकें विभिन्न विद्यालयों, बालसेवी संस्थाओं, विद्यार्थियों को भेंट की जा चुकी हैं। राजन ने बताया कि यह अभियान बालकों में सत्साहित्य पढ़ने की रुचि बढ़ाने, हिन्दी के प्रति ममत्व जगाने, चारित्रिक विकास करने तथा साहित्य-सृजन के प्रति अनुराग देने हेतु प्रारंभ किया गया जिसकी सब ओर सराहना की जा रही है। उनके अनुसार राजस्थान के अलावा उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखण्ड, मेघालय आदि के स्कूलों में समारोहपूर्वक पुस्तकें वितरित की गईं।

पोथीखाना पोथीखाना पोथीखाना

कविता में छाया भी परछाया भी

मुनिश्री सुखलालजी हमारे समय के एक ऐसे वरिष्ठ कवि, चिन्तक, दार्शनिक, धर्मजीवी, अध्यात्म गहरी, जैनत्व के मीमांसक और सुधी व्याख्याकार हैं जो पिछले सात दशक से जीवन-साहित्य के शील-सर्जक बने हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के क्रांतधर्मी आचार्य तुलसी और प्रज्ञा महोदधि आचार्य महाप्रज्ञ का स्तुत्य सान्निध्य पा उन्होंने अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन में महनीय भूमिका निभाते हुए 'अणुव्रत प्राध्यापक' तथा 'शासनश्री' महामहिम उपाधि-संबोधन श्रीवरण किया।

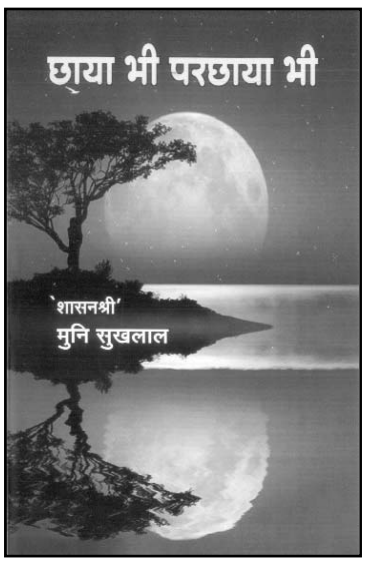

साहित्य की धारा-प्रवाहिनी में कविता का सृजन काव्य की तत्वज्ञता से आंका जाता है किन्तु सामान्य जीवन की काव्य-धारा में हर मनुष्य कल्पनाशील कविता की रचना करता है। लयबद्ध गावणी को गीत देता है। जनमानस की ऐसी आमधारी उड़ान के लिए राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'कोई कवि बन जाय, सहज संभाव्य' कहा है।

हर समय हर काल में विज्ञजनों ने कविता की कसौटियां रची हैं और उनके आधार पर कविताएं भी लिखी गई हैं। मुनिश्री सुखलालजी की 'छाया भी परछाया भी' काव्य-कृति इससे अछूती नहीं है। भूमिका लेखक लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने तो सच्ची कविता का उद्देश्य ही बेहतर मनुष्य, बेहतर समाज बनाना तथा पाठक के चेतना-स्तर को उन्नत और समृद्ध करना लिखा है। उन्होंने यह भी कहा है कि मुनिवर की कविताएं अत्यंत सहज, सरल एवं बातचीत की शैली में हैं। एक भी कविता ऐसी नहीं जो पाठक को कुछ-न-कुछ न देती हो।

कृतिकार मुनिश्री सुखलालजी ने अपनी प्रस्तुति में अपनी काव्यजनित रचनाधार्मिता के बारे में स्पष्ट किया कि रचना की सार्थकता इसी में है कि वह मर्म भेदी हो। उसमें अर्थपूर्ण शब्दों का जीवंत प्रयोग किया जाये। सही भाव को सही शब्दों में पिरोया जाये। यह जरूरी है। मेरी कुछ कविताएं विचारों के भार से बोझिल हैं तो कई समझने में बहुत सरल भी हैं।

सच है, छाया भी परछाया भी की कविताएं दो रूपों में हैं। कुछ कविताएं छंदबद्ध हैं तो कुछ अछन्दी, छन्द बंधन से मुक्त हैं। जो सरल हैं वे कथन में तो सरल हैं पर अपने समय-बोध में उस कविता के मर्म-बोध को पाने के लिए उसका सत्यान्वेषण याकि तथ्यान्वेषण विस्तार की व्याख्या चाहता है। उदाहरणार्थ -

कृत्रिम है सब नाम रुपये, कृत्रिम है शब्दों की माया।
अलग खड़ा रहता है चेतन, अलग खड़ी रहती है काया।।

ये पंक्तियां कथन में तो सरल हैं, सहज भी हैं, दुरुह भी नहीं हैं पर चेतन और काया के भेद को समझने के लिए जीवन की सार्थकता के मर्म अथवा जैनदर्शन की चेतन-अचेतन, आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी अवधारणा का अध्ययन होना जरूरी है।

इसी प्रकार 'वन्दन' नामक गीत लिया जा सकता है जिसकी एक भी पंक्ति न तो सरल और न सहज कही जा सकती है। सामान्य पाठक जो केवल कविता का आनंद लेना चाहता है उसे तो उस आनंद से वंचित ही होना पड़ेगा। उदाहरणार्थ यह छन्द-

बुद्धि तुम्हारे द्वार-देश पर स्वयं ठिठक जाती।
अलख अगम की अमल ज्योति प्राची में उग आती।।
क्या उस को कुंकुम दिखलायें, संशययुत चेतन।
प्राण-पुटों में बसा हुआ है, तुलसी बन चन्दन।।

एक और विश्वास शीर्षक कविता देखिये-

दस वर्षों से
मेरा बैंक से लेन देन है
पर जब भी चेक का भुगतान लेने जाता हूं
क्लर्क मुझे नहीं देखता
मेरे हस्ताक्षरों को देखता है
सिक्के के बाजार में
आदमी की अपेक्षा
हस्ताक्षर अधिक विश्वसनीय हैं।

इस कविता को समझने के लिए बैंकिंग की लेनदेन प्रणाली को समझना होगा। इस दृष्टि से यह एक पक्ष-विशेष की कविता है। इसी संदर्भ में डॉ. नरेन्द्र भानावत की 'आदम मोहर और कुर्सी' कविता की यह पंक्ति याद हो आती है-

'आदमी से आदमी की मुहर बड़ी होती है।' आदमी से आदमी के पद को दर्शाती उसकी रबड़ स्टेम्स बड़ी है। उसके बिना आदमी का जैसे कोई अस्तित्व नहीं है, कोई पहचान नहीं है। जहां बैंक में आदमी के हस्ताक्षर ही सबकुछ होते हैं वहां ऑफिस में आदमी के हस्ताक्षर उतने ही गौण होते हैं। उनका अस्तित्व उनके नीचे लगी रबड़ स्टाम्प से बढ़ जाता है, पहचाना जाता है।

इसी तरह 'कोई-कोई औरत' नामक काव्य पुस्तक में संगृहीत डॉ. महेन्द्र भानावत की ये पंक्तियां देखिये-

मुझे खाने के लिए रोटी चाहिये
तुम्हें पेट भरने के लिए पैसा
तुम्हारा पेट तिजोरी बन गया है
मैं रोटी से रोटी बढ़ाना चाहता हूं
मनीप्लांट मैंने भी लगा रखा है
पर चूंकि वह चुराया हुआ नहीं है
इसलिए न फल देता है न फूल।

-मनीप्लांट से

और -

पहले मैं ही मैं था
अब शहर बढ़ गया है
मुझे कोई नहीं देखता भालता
मन करता है-
नेमप्लेट की जगह
लटक जाऊं।

-नेमप्लेट से

ये अछन्दी कविता बहुत सरल कही गई हैं किन्तु ऐसा नहीं है। उनका अर्थ वही नहीं होता जो वे कह रही हैं। उनके प्रतीकों को जनजीवन में व्याप्त मिथकों, मर्मों तथा धारणा-अवधारणाओं को टटोलना होगा अन्यथा सीधा शाब्दिक अर्थ तो उस धौंकनी सा हो जायगा जिसमें हवा नहीं है। जो फूली हुई नहीं होकर पेट-पीठ से चिपकु निष्प्राण पड़ी है।

पिप्पलाद : छोटे से गांव की बड़ी देवी

डॉ. मनोहर श्रीमाली लिखित 'पिप्पलाद प्रशस्ति' एक छोटे से किन्तु अति महत्वपूर्ण बड़ाई वाले गांव की देवी पिप्पलाद से सम्बन्धित महत्वपूर्ण पुस्तक है। इसका महत्व इसलिए भी है कि इस 94 पृष्ठीय पुस्तक में जो सामग्री संकलित की गई है वह समग्रत: शोधपूर्ण है अत: यह एक मूल्यवान शोधकृति है।

पिप्पलाद एक पहुंचे हुए ऋषि थे जो रूद्र के अवतार माने जाते हैं। उन्होंने अपने तपोबल से आकाश मार्ग से जाते नक्षत्र मंडल को धरती पर गिरा दिया और जहां यह नक्षत्र मंडल गिरा वह स्थान उनवास गांव के पास का है जहां आज भी शनिदेव का स्थान है। इसी उनवास गांव में पिप्पलाद माता का मंदिर है। इस मंदिर की स्थापना पिप्पलाद ने अपने नाम से की थी। यह देवी दुर्गा का मन्दिर है। एक शिलालेख भी संवत् 1016 का मन्दिर के जीर्णोद्धार का लगा हुआ है।

किन्तु कालान्तर में यह मन्दिर पीपलाज माता के मन्दिर के नाम से जाना गया। उनवास आज तो एक छोटा सा गांव है किन्तु आदिवासी भीलों के आनुष्ठानिक लोकनृत्य गवरी में इस माता के सम्बन्ध में जो लम्बी गाथा, जिसे भारत नाम से सम्बोधित किया जाता है, में इस देवी को देवियों में सबसे बड़ी देवी कहा गया है और यहीं सातवें पाताल से राजा वासक की बाड़ी से एक वृक्ष लाया गया जो बड़ल्या हींदवा के नाम से जाना जाता है।

कहते हैं कि इस वृक्ष पर नौ लाख देवियों का वास है और यह वृक्ष बारह बीघा में फैला हुआ है। स्वाभाविक है,

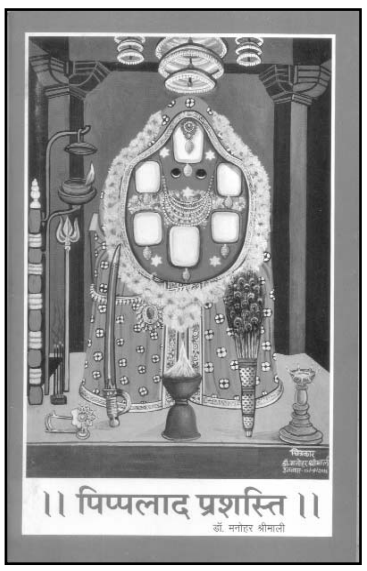

बड़ का वृक्ष अपनी जड़ों से पुन: धरती के गर्भ में जाकर फिर से वृक्ष के रूप में अपनी उपस्थिति देता हुआ सैकड़ों वर्षों तक अपना फैलाव देता है।

देवी पिप्पलाद के बहाने डॉ. श्रीमाली ने उनवास की प्राचीनता को शास्त्रों के आधार पर बड़े मनोयोग से वर्णित किया है। इसमें उनवास के पौराणिक माहात्म्य से लेकर बाद के इतिहास-क्रम का शास्त्र और इतिहास सम्मत वर्णन ही नहीं किया गया है अपितु आगे जाकर लोकजीवन में घटित घटनाओं, मिथकों, कहानी-किस्सों, किंवदंतियों के माध्यम से उनवास की जो स्थिति-अवस्थिति रेखांकित की हुई मिलती है उसे भी बड़े परिश्रम से खोज निकाला है।

डॉ. श्रीमाली स्वयं एक सिद्ध रचनाकार हैं। इस दृष्टि से देवी के प्रति उनकी अटूट आस्था विश्वास के रहते उन्होंने जो श्लोक, प्रशस्ति, भजन, छंद, लावणियां, गीतिकाएं, आरती लिखीं वे भी इस पुस्तक की शोभा बनी हैं।

राजस्थान में ऐसे अनेकों छोटे-छोटे गांव और अनेकानेक लोकदेवियां-देवता स्थापित हैं जिनके बारे में लोककंठों पर तो पर्याप्त जानकारी मिलती है किन्तु वह सारी बिखरी-फैली-बेतरतीब है जो सिलसिलेवार प्रामाणिकता तक नहीं पहुंचाती। ऐसे में डॉ. मनोहर श्रीमाली की यह पुस्तक बड़ी उपयोगी, उल्लेखनीय और उद्धरणीय है जिसे आदर्श बनाकर शोधानुसंधान करने वाले उन प्रांतों की खोज कर धरती के भीतर के अंधेरे को चीर रोशनी के कई गवाक्षों के दर्शन कर सकते हैं।

काव्यामृतम

प्रस्तुत जेबी पुस्तक स्तवन, स्तुति, सज्झाय तथा गीतिका नामक चार विभागों में छपित है। इनमें क्रमश: 26 स्तवन, 26 स्तुतियां, 21 सज्झाय, 9 गीतिकाएं तथा 6 विविध गीति-वंदनाएं हैं। इसके रचनाकार मुनि मनितप्रभसागर ने रचना-उद्देश्य के संबंध में में लिखा है- 'प्रस्तुत पद्य रचनाएं मेरे हृदयस्थ श्रद्धा की प्रतीक हैं तो भावों का दर्पण भी। इनमें से अधिकांशत: रचनाओं का निर्माण विहार यात्रा के दौरान ही हुआ है। जैसे-जैसे शब्दों में समर्पण की सरलता, भक्ति की स्निग्धता और भावों की मधुरता घुलती गई त्यों-त्यों हृदय के आंगन पर काव्यामृत का संचार होता रहा।' कुल 186 पृष्ठीय यह पुस्तक श्री जिनक्रांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाजमंदिर, मांडवला-343042 से प्रकाशित है।

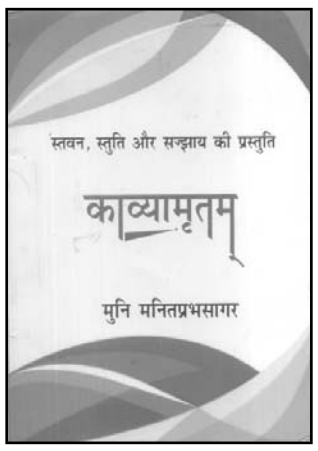

-सत्पुरुष

गिद्ध

बहुत तीक्ष्ण है दृष्टि उनकी
कितनी भी दूरी पर
मरा हो जानवर
पहुंच ही जाते वहाँ
झुंड के झुंड
गिद्धराज जटायु के वंशज।

भर जाता था सूना आसमान
उनके विशाल डैनों से
हाय डायक्लोफिनाक
तुम्हें खा पशु मरे
पशु खाये गिद्ध।
अब कहीं दिखते
उंचे पेड़ों, पहाड़ी ढलानों
और नदी किनारे
सेवक राम के और
जमादार जनता के।
(डायक्लोफिनाक-एक प्रतिबंधित दवा
जिसके खाने से गिद्धों का नाश हुआ)

- रेवतीरमण शर्मा

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 सितम्बर 2017

सम्पादकीय

हिंदी की विडम्बना और विडम्बना में हिंदी

सितम्बर माह शुरू होते ही हिन्दी की पलेवण शुरू हो जाती है। जगह-जगह हिन्दी दिवस पर आयोजन, छोटी-मोटी गोष्ठियां, सभाएं, हो सके तो छा जाने के लिए सम्मेलन। धुंआधार भाषण, व्यंग्य, अफसोस कि हिन्दी राष्ट्रभाषा की सीट पर आसीन नहीं हो सकी। राजभाषा और स्वराज भाषा के बीच डोलती सुरंग। हिलता बांक खाता पुल। कुछ नहीं हुआ तो अंग्रेजी हटाओ का भुतही नारा। सुबह से शाम तक जो कां-कू करनी हो कर लो फिर दिवस का अवसान समीप आने पर हिन्दी को सलाम।

हिन्दी के नाम पर यह चोंचलेबाजी हर वर्ष देखने को मिलती है। राष्ट्र फुदक रहा है। पूरे विश्व में डंका पिट रहा है। विकास की धारा में धारा प्रवाह बना हुआ है और इधर उसकी जबान तोतली है। जिस राष्ट्र की भाषा अटकी-भटकी हो, तुतलाती हो, बेजुबान, जबान नहीं खोल पाती हो उस राष्ट्र की हुंकार क्या हो सकती है!

सच पूछा जाय तो आजादी के सत्तर बरस बाद भी भाषा के नाम पर हमारी हिन्दी विडम्बनाओं की उलझन में आंकड़-बांकड़ बनी हुई है। यह हमारी हिन्दी की विडम्बना है कि वह विडम्बनाओं के मक्कड़जाल में उलझी हुई है। अंग्रेजी भगाओ का नारा देते-देते हम हिन्दी को ही अंग्रेजीमय हिन्दी और हिन्दीमय अंग्रेजी कर अखबारों तक में भाषा के नाम पर अबखाई पैदा कर रहे हैं।

हिन्दी की वकालात करने वाले हम ही लोग हिन्दी को हिंग्लिश कह कर उसको बौदा करने में लगे रहे। हिन्दी मौकों पर लम्बे-चौड़े भाषण, आश्वासन, कसमें खाने के मुखौटों में रहकर अपने भीतरी चोले में अंग्रेजी की 'अंग-रेजी' पहनकर अपनी दुधारी पहचान देते रहे।

हम कितने हिन्दी दिवस और कब तक मनाते रहेंगे? क्या कहीं किसी अन्य मुल्क में भाषा तथा राष्ट्रभाषा का दिवस मनाया जाता है? प्रधानमंत्रीजी द्वारा हिन्दी में भाषण देना अति प्रशंसनीय है किन्तु उनके भाषण मात्र से हिन्दी की राष्ट्रभाषाई प्रतिष्ठा नहीं हो सकती। हमारी अफसरशाही पर अब भी अंग्रेजियत की बलाएं सवार हैं। वे हिन्दी को खोट देने में ही लोटपोट हैं। हमने वह समय देखा है जब किसी बड़े प्रतिष्ठान में हिन्दी दिवस पर बड़े साब को चैक पर हिन्दी में हस्ताक्षर करने पर गर्व के साथ सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाता था। फर्क आया तो यही कि उन अधिकारियों ने अब अपने गले से अंग्रेजी की टाई हटा दी है किन्तु वही टाई उनके घरों में उनके लाड़लों के गलों की शोभा बन इठला रही है।

कान्यो-मान्यो

अलार्म नै अलाम मानवा री गफलत

कान्यो बीत्यो समै चिंतारवा लागग्यो जदी वो नवी-नवी लाड़ी लाय गाम सूं स्हैर मांय आय किराया रा कमरा में रैवण लाग्यो। मान्यो वंडे पां ऊबो हो जदी वो खिलखिल हंसतो बोल्यो, मान्या म्हारी वात सुण, एक घणी सोवती वात सुणाऊं जनै याद कर मन ई मन हंसणो आवै।

मान्यो आपणो ग्यान भूल नै ध्यान-कान कान्या कन्नै जोड्यो। कान्ये वात सरु कीधी। एक घाटी माथै कमरो किराये लीधो तो वंडे नजीक ही एक दूजो कमरो हो जी मांय एक बासा नै वांरी घरवाळी रैती ज्यांनै म्हां भाबा कैवता। एक दन सुबै उठवा मांय म्हनै देर वेइगी जदी म्है म्हारी नुवी लाड़ीजी ने क्यो कै आंख्यां टैम माथै नी खुली। वै-न-वै घड़ी रौ अलार्म नी वाज्यौ कै अलार्म भरणोई भूलग्यौ। लाड़ीजी या वात सुण हंसबा लागा जदी म्हूं समझ्यौ कै कई-न-कई करामात वी है। दोई जणां आपस में रोळां करवा लागग्या। नेडै बासा आपणै कमरा मांय सुबै रा नाम ठाम लेतां म्हाणी वात सुणी। वात तो वांरै कानां मांय पोंची नीं पण अलार्म सबद सुण वां सोच्यो कै सुबै-ई-सुबै दोई नवा परण्या धणी-लुगाई म्हारी मजाक माथै उतर आया अर म्हनै अलाम कैयरिया है। अलाम सबद सुण वांनै रीस आई। वांसूं रैवाणो नीं जदी म्हारै कमरा मांय आय धीरप सूं बोल्या, कासा आप दोयां रौ म्हैं कई वगाड़ कीधौ जो आप म्हनै अलाम कैयरिया हो। बासा रै मुंडाऊं अलाम सबद सुण म्हैं भौचक रेईग्यौ। म्हनै वात समझ नी आई। हाल घड़ी तो म्हां उठ्या हां। बासा रौ विचार म्हांणै क्यूं आवा लागो। जदी म्हूं धीरप स्यूं बोल्यो, बासा सुबै-सुबै रामजी रौ नाम लां कै गाल्यां दां। अर आप म्हांणो कई वगाड्यौ जो आपने कुवचन कैवां। म्हां नवा-नवा अठै आया हां, आपनै क्यूं गलत-सलत बोलांगा। आप म्हाणौ कई वगाड्यौ। बासा या वात सुण होच में पड़ग्या जदी म्हनै म्हांणी रोळ करवा री वात याद आई।

म्हूं बासाऊं बोल्यो कै आज म्हीं देरसूं उठ्या। अलार्म वाजी नीं जो आपस मां पूछर्‌या हा कै कई वात वी जो अलार्म नी वाजी कै सुती वगत अलार्म देणो भूलग्या। आप कठै या वात सुण गलत वात तो सोच नीं लीधी कै म्हां आपनै अलाम बोलर्‌या हां। कंडी मां मरै नै कंडै हपने आवै जसी वात लागै म्हनै। बासा या वात सुण आपणी गलती स्वीकारी अर दोई कान पकड़तां माफी मांगवा लाग्या। म्हीं पाणी-पाणी वेइग्या नै बोल्या- आप तो म्हांणे मां-बाप बरोबर हो। आपनै गेले चालतां असी वात क्यूं बोलांगा। माफी आप नीं म्हां मांगा। यूं बोल म्हां वांरा पग पड्या जदी बासा रो जीव हल्को व्यौ। वंडे पछै तो बासा अर भाबा दोई सागसात म्हांनै बावड़-मावड़ ज्यूं राखण लागग्या। मान्यो बोल्यो, बुड़ापे मांय भरम वै जावै। आपांनै ई सावचेत रै भरम छेटी करणो है। माफी मांगवाऊं कोई नाना बाप रो नीं वै।

'एक्सपोर्टमाइन' बना आयात-निर्यात का विश्वसनीय वैश्विक साथी

उदयपुर। इम्पोर्ट और एक्सपोर्ट की दुनिया में वैचारिक क्रांति का सूत्रपात करने वाली उदयपुर की जुझारू उद्यमी पूनम डुंगरवाल के स्टार्टअप 'एक्सपोर्टमाइन' के इन दिनों वैश्विक व्यापार जगत में चर्चे हैं। लगातार विभिन्न आधारभूत समस्याओं से उभर कर पूनम ने अपने स्टार्टअप 'एक्सपोर्टमाइन' के माध्यम से व्यापारियों को एक ऐसा विश्वसनीय प्लेटफार्म दिया है जिसके माध्यम से अमेरिका जैसे देश में

निर्बाध रूप से एक्पोर्ट कर सकता है। 'एक्सपोर्टमाइन' के विश्वसनीय, अद्यतन डेटाबेस इसे उपयोग करने वाले व्यापारियों को त्वरित निर्णय करने की सहूलियत तो देता ही है, व्यापार वृद्धि में भी बहुत सहायक है।

पूनम ने बताया कि जब वे एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में काम करती थीं, तब उनके पास वैश्विक व्यापार प्लेटफार्म बनाने का सुझाव आया जिस पर तत्काल अमल करते हुए नए स्टार्टअप की शुरुआत की। लगातार पांच वर्षों तक भारतीय व्यवसाइयों के साथ साझा कार्य करने के अनुभव के साथ उन्होंने एक्सपोर्टमाइन की शुरुआत नवंबर 2016 में की।

उनका उदेश्य वैश्विक व्यापारियों को आयात-निर्यात का एक ऐसा मंच प्रदान करना था जहां व्यापारियों को आयात निर्यात की सटीक सूचना ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से मिल सके। इससे पहले उन्होंने टीम बनाकर वैश्विक बाजार के आंकड़े देख व गहन अध्ययन के बाद तय किया कि अमेरिका के इंपोर्ट के आंकड़ों को कंपनियों को उनकी जरूरत के मुताबिक उपलब्ध करवाना है। टीम ने बहुत कठिन परिश्रम के बाद पांच साल का डेटाबेस तैयार किया जो अपने आप में कीर्तिमान है। इस डेटाबेस के वैज्ञानिक विश्लेषण के माध्यम से दुनियाभर के एक्सपोर्टर्स को खरीदारी के ट्रेंड्स, गुणवत्ता से लेकर वह सभी जानकारी दी जाती है जो दूसरे किसी भी स्टार्टअपवेब पोर्टल पर नहीं मिलती।

यूएस के इंपोर्ट डेटा को हर महीने अपडेट कर इंटरनेशनल बायर व सेलर को अपडेट भी किया जाता है। इस स्टार्टअप से फ्रोड व चीटिंग जैसी परेशानियां दूर हो गईं हैं। क्लिक करते ही पता चल जाता है कि खरीदार व विक्रेता का बिजनेस रिकॉर्ड कितना अच्छा व मानकों के अनुरूप है। यूएस दुनिया के सभी देशों से बेस्ट क्वालिटी के प्रोडक्टर आयात करता है।

पूनम ने बताया कि अमेरिका के सभी खरीदार या इंपोर्टर्स बहुत ही सोच-समझकर व पूर्ण विश्वसनीयता के पुख्ता होने पर ही करोड़ों-अरबों का व्यापार करते हैं। हम ऐसे दौर में है जहां भारत स्टार्टअप इंडिया, स्टेंड अप इंडिया,मैक इन इंडिया जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से एक बार फिर व्यापार जगत में विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर हैं। ऐसे में इस स्टार्टअप से जुड़कर उद्यामियों के पास व्यापार को सफलता के नए क्षितिजों तक विस्तार करने का सुअवसर है। पूनम ने बताया कि उनके स्टार्टअप 'एक्सपोर्टमाइन' को वैश्विक स्तर के भारत को रिप्रजेंट करने का स्वर्णिम अवसर मिला। ब्लैक बॉक्स कनेक्ट प्रतियोगिता जीतने के बाद इसी वर्ष 14 अगस्त, 2017 से 24 अगस्त, 2017 तक उन्हें दुनिया के चुनिंदा 15 स्टार्टअप के संस्थापकों साथ सेन फ्रांसिस्को के सिलकॉन वैली में दो सप्ताह के व्यावसायिक आवासीय प्रशिक्षण मिला। वहां पर विश्व की कई नामी कंपनियों के प्रतिनिधियों ने विश्व व्यापार के नए ट्रेंड्स सहित इंपोर्ट-एक्सपोर्ट के नए तौर-तरीकों आदि के बारे में विस्तार से चर्च कर एक नई अंतरदृष्टि प्रदान की।

गौरतलब है कि सिलकॉन वेली में सिर्फ उन्हीं नए स्टार्टअप को प्रशिक्षण का अवसर दिया जाता है जिनकी थीम विश्व स्तरीय होती है व जिनमें भविष्य की अपार संभावनाएं छिपी होती हैं। अभी एक्सपोर्टमाइन के दो कार्यालय हैं, एक उदयपुर में और एक बेंगलूरू में। पांच लोगों से शुरू हुई इस कंपनी में अभी 20 विशेषज्ञ काम कर रहे हैं। पूनम ने बताया कि उदयपुर के उद्यमियों के लिए इस स्टार्टअप के माध्यम से व्यापार के विस्तार की असीम संभावनाएं हैं। यहां के एक्सपोर्टर अभी पारंपरिक तरीकों से व्यापार कर रहे हैं, उनमें हमारे नए स्टार्टअप पोर्टल के माध्यम से नई गतिशीलता आ सकती है, सफलता के नए सोपान तय किए जा सकते हैं।

पूनम ने नए स्टार्टअप युवा उद्यमियों से अनुरोध किया है वे लीक से हटकर काम करने का माद्दा रखते हैं तो हमेशा कर्मशील और जुझारू बने रहें। छोटी-मोटी बाधाओं का डटकर मुकाबला करें व पारदर्शिता व प्रतिबद्धता के साथ अपने विजन को साकार करें।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/
मसखरी	199/
लोकदेवता कल्लाजी	15/
अजूबा राजस्थान	60/
कोई--- कोई औरत	15/
मरवण मांडे मारणा	25/
संस्कृति के रंग	25/
लोककला : प्रयोग और प्रस्तुति	15/
मेंहदी राचणी	25/
आछी करणी पार उतरणी	20/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

खोज-खबर

शुकदेव जो मुझे सुखदेव ही लगे

श्री शुकदेव शास्त्री से पहली भेंट उदयपुर के आकाशवाणी केंद्र में हुई। वहां जाने का प्रयोजन किसी रेकार्डिंग का ही रहता था। कभी किसी वार्ता के लिए, कभी किसी परिचर्चा के लिए, कभी काव्यपाठ के लिए तो कभी कृति-समीक्षा के लिए या फिर काव्यगोष्ठी के लिए। शास्त्रीजी की परख-दृष्टि तथा संचालन-दक्षता से सदैव यह लगता कि ये आकाशवाणी की तरह ही शब्दों के प्रयोग, काव्यावली की सौंदर्यप्रियता तथा प्रस्तुतीकरण-प्रसारण की तीक्ष्ण अनुशासनबद्ध पक्षधरता के गहन विश्वासी एवं तदनुकूलता के प्रबल हिमायती हैं। इस दृष्टि से उन्होंने मुझे बड़ा प्रभावित किया और मैं उनका अजाना सीखार्थी ही बना रहा।

शास्त्रीजी मुझे ठंडे मिजाज के, सरल प्रकृति के, सहजता के भले इंसान लगे। उनकी यह सदाशयता ही रही कि रेकार्डिंग होने के बाद वे व्यस्त होते हुए भी अलग से सोफे पर बैठ-बिठाकर कुशलक्षेम पूछते। हेलमेल करते और चाय के साथ अपनी आत्मीयता का मिठास बनाये रखते। उनके धोती-जब्बे के पहनावे में वे कभी भी मुझे ढीले नहीं लगे। ऐसा पहनावे वाले अधिकतर ढीले ही दिखाई देते हैं या फिर कुछ देर बाद अपनी ढिलाई का दर्शन-दिग्दर्शन ही अधिक देते मिलते हैं पर शास्त्रीजी ने न केवल संभाषण-संवाद में अपितु प्रसारण-विषय, वकृत्व-कला तथा गो-मुख से बहते झरने की तरह अमृत-जल के पानीदार पांडित्य पुरोधा ही अधिक लगे।

इसका खुलासा करते डॉ. इन्द्रकुमार श्रीमाली ने ठीक ही बताया कि उदयपुर के आकाशवाणी केन्द्र में शास्त्रीजी हमारे बीच अपनी विद्वता के कारण आदरित रहे। वे हिन्दी से अधिक संस्कृत के विद्वान थे, इसे बहुत कम लोग ही जानते थे। कईबार उन्हें संस्कृत में धाराप्रवाह बोलते देख हम सब चकित रह जाते। मुख्यत: अस्थल आश्रम के महंत श्री मुरलीमनोहरशरण शास्त्री के साथ उनका संवाद-संभाषण चलता तो लगता, ऐसी सांस्कृतिक सुचिंत्य वाणी बोलने वाले दोनों देवपुरुष ही हैं जो अपनी दिव्यता से सबको सम्मोहित किये हैं। दोनों के श्रीमुख से विद्वता का ऐसा झरन अन्यत्र कहीं देखने-सुनने को नहीं मिला।

सुना यह भी गया कि वे अपनी हर कार्यप्रणाली और व्यक्तित्व दर्शन में शुचिता के प्रबल पक्षधर थे। फाइलों के अंबार और उनके बासी मुंह से उन्हें चिढ़ थी। इस दृष्टि से सरकारी कामकाज में अपने जिम्मे की जिम्मेदारी से बचे रहने के बहाने उन्हें पसंद नहीं थे। हर समय स्पष्ट बने रहने की बजाय गोपनीय बने रहने की प्रवृत्ति को वे घृणात्मक बीमारी ही मानते थे। ऐसा उनका स्वभाव ही बन गया था जो मानवीयता की दृष्टि से अच्छा था पर सरकार के लिए अधिक फिट नहीं कहा जाता सो वे अपनी प्रकृति की वशीयत में अलग ही दिखाई दिये।

एक मजेदार किस्सा डॉ. श्रीमाली ने यह सुनाया कि अपनी असाधारण विद्वता और संस्कृत के पांडित्य के कारण साक्षात्कार में उन्होंने सभी सदस्यों को विमोहित कर लिया। पहलीबार जब उन्हें आकाशवाणी केन्द्र जयपुर में नियुक्ति मिली तो मुरलीमनोहर 'मंजुल' अपने साथियों सहित स्टेशन पर उन्हें लेने पहुंचे। ठीक समय गाड़ी आ पहुंची।

एक-एक कर सभी सवारियां स्टेशन से बाहर चल पड़ीं पर शास्त्रीजी नहीं दिखाई दिये तब रेलगाड़ी का एक-एक डिब्बा देखा गया पर निराशा ही मिली। वहीं पास में एक गेरुआ वस्त्र पहने स्वामीजी खड़े थे। नाउम्मीद के स्वर में जब उनसे पूछा गया तो बोले- 'मैं ही शुकदेव शास्त्री हूं।' तत्काल तो मंजुलजी को विश्वास नहीं हुआ किंतु धीरे-धीरे उनसे बतियाते उनकी उम्मीद पक्की हो गई।

लेकिन समस्या यह खड़ी हो गई कि ऐसी पोशाक में शास्त्रीजी को कहां ले जाया जाय। आकाशवाणी केंद्र में प्रतीक्षारत लोगों में इस महामनीषी को ले जाना उचित नहीं जान वे सीधे उन्हें खादी की दुकान पर ले गये और वहां से उनकी पसंद का ओपता धोती-जब्बा खरीद उन्हें पहनाया।

उदयपुर में, आकाशवाणी केंद्र में एकबार काव्यगोष्ठी रखी गई। उसमें नंद चतुर्वेदी, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. प्रभा वाजपेयी, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, डॉ. रजनी कुलश्रेष्ठ, देवकर्णसिंह राठौड़, कमर मेवाड़ी और मैं स्वयं था। इसमें मैंने अपनी छोटी-छोटी चार कविताएं पढ़ी थीं-

(1) मनीप्लांट

मुझे खाने के लिए रोटी चाहिये
और तुम्हें पेट भरने के लिए पैसा
मनुष्य तुम भी हो और मैं भी
करने को सब पेट के लिए करते हैं
पेट पापी जो है
मगर तुम्हारा पेट
तिजोरी बन गया है।
पैसे से पैसा बढ़ता है
मैं जानता हूं
किंतु मैं तो
रोटी से रोटी बढ़ाना चाहता हूं
मनीप्लांट मैंने भी लगा रखा है
पर चूंकि वह चुराया हुआ नहीं है
इसलिए न फल देता है न फूल।

(2) नेम-प्लेट

पहले मैं ही मैं था
अब शहर बढ़ गया है
मुझे कोई नहीं देखता भालता
मन करता है-
नेम-प्लेट की जगह
लटक जाऊं।

(3) अस्तित्व

मैं कई पीढ़ियों का
अस्तित्व लिए जीता हूं।
इसीलिए
जब देखो तब रीता ही रीता हूं।

(4) तुम्हें क्या मालूम

घेरघुमेर चारूंमेर
बड़ले का वृक्ष।
उसे काटकर तुमने कितनी हत्या मोल ली
कितना प्रायश्चित करना पड़ेगा तुम्हें इस पाप का
न जाने कितना श्राप झेलना पड़ेगा तुम्हें।
वृक्ष कटता है जैसे परिवार कटता है
अपनी उंगली तो काटकर देखो तुम।
कितनों का सहारा होता है वृक्ष !
कितनों का घरबार, जीवन और
संसार होता है वृक्ष!
तुम्हें क्या मालूम।

रेकार्डिंग के पश्चात शास्त्रीजी ने मुझे कहा- 'ऐसी कविताएं मैंने पहलीबार सुनी हैं। एकदम दिल छूती। लोकचित्त की अवधारक। शब्द-शब्द खोलतीं। कुछ कहतीं। चहकतीं। ये कविताएं सबकी हैं। सरलतम जीवन की समझाइश देतीं।' उसके बाद जब-जब भी उनसे मिलना हुआ, मुझे लगा, मैं उनके अधिक नजदीक हो गया हूं।

उदयपुर से जाने के बाद उनकी याद तो बनी रही किंतु मिलना एकाध बार ही हुआ वह भी स्वप्न की तरह। चिमटी-चिमटी सूचनाओं से यह तो लग ही गया कि वे अपनी सर्विस में अब सहृदय नहीं रहे। मुकद्मों के मक्कड़जाल से भी वे आवृत्त हो गये हैं। इधर आकाशवाणी के महानिदेशालय को भी वे सर्वोच्च न्यायालय तक घसीट ले गये। खास बात यह रही कि अपनी हर पैरवी उन्होंने स्वयं ने की। इसके बाद उन्होंने अपनी कोर्ट-कचहरियों की जीवनलीला पर अपनी आत्मकथात्मक एक पुस्तक प्रकाशित की और मुझे याद रख भेंट भी की।

इस प्रकार शास्त्रीजी से जैसा जितना मैं परिचित हो सका, मुझे लगा कि उन्होंने अपने जीवन में झांझावत ही अधिक झेले। ज्योतिषी कई बार कहते हैं, व्यक्ति चाहकर भी मजबूर होता है कि वह अपनी चाह के अनुसार कुछ करने में अकरणीय रहता है। विद्वता अपनी जगह है। पुरुषार्थ अपनी जगह है। बुद्धि विवेक बल और समय सब अपनी जगह हैं लेकिन भाग्य सर्वत्र सब जगह फलित होता है पर यह पता नहीं चलता कि उसमें क्या बदा है।

जो भी हो, शास्त्रीजी अपनी विद्वता और मित्रों के प्रति स्नेहशील आत्मीयता के कारण सबके बीच अभिनंदनीय बने हुए हैं। मेरे लिये तो वे तब भी और आज भी 'सुखदेव' ही बने हुए हैं।

कपड़ा सूंघ रोगी का इलाज

आजकल रोगी की बीमारी का पता मशीनें करती हैं। डाक्टर बीमार के इलाज से पूर्व उसके शरीर की कई तरह की जांचें करवाने की पानड़ी लिखते हैं किंतु पहले ऐसा नहीं होता था। रोगी को बिना छुए, बिना देखे ही बीमारी का पता लगाने वाले व्यक्ति मेरे भी देखने में आए हैं। कईबार ऐसी बीमारियां होतीं जो सबको दीखतीं।

किसी का फंद-फांदे में आ जाना, चेचक निकलना, बुखार आना जैसी बीमारियों की पहचान प्रत्येक को रहती। इनके इलाज के नुस्खे सबको पता रहते। झाड़ागर झाड़े झपटे या किसी के लपेटे में आये का झाड़फूंख कर इलाज करता। मंत्रवादी मंत्र के माध्यम से बीमारी को बांध देता। चेचक की शक्ल के अनुसार छोटी चेचक, बड़ी चेचक, चपटी चेचक को देख चेचक माता के धोक लगाई जाती। चपट्या बावजी की बोलमा बोली जाती।

ऐसे ही बुखार की परख होती। नियमित बिन टूटे बुखार बना रहना, टूट-टूट कर बुखार आना, एक-एक दिन छोड़ बुखार आना, तीसरे दिन बुखार आना जैसी बीमारी में झाड़ा-झपटा, मंतर से इलाज होता। एक दिन छोड़ आने वाला एकांतरा कहलाता। तीसरे दिन आने वाला तेजरा कहलाता। इनका इलाज रोगी को कहानी सुनाकर किया जाता।

मेरी जन्मभूमि में इन सबका इलाज करने वाले होते। आसपास के लोग भी इलाज के लिए लाये जाते। इलाज सर्वथा निशुल्क होता। एक उत्तम बा थे जो एकांतरे बुखार का इलाज कहानी सुनाकर करते। कहानी पूरी होने पर वे रोगी को भाग जाने को कहते। रोगी भागता तो पीछे से ऊंट के मींगणे फैंकते जो रोगी की पीठ पर लगते। ज्यों रोगी भागता, उसका बुखार भी रफ्फूचक्कर हो जाता।

स्वयं मुझे बचपन में बुखार ने बुरी तरह दबोच लिया। यह धूजणी वाला बुखार था। मां ने गोदड़े पर गोदड़ा करके तीन-तीन गोदड़े ओढ़ाये मगर मेरी धूजणी नहीं गई। मुझे पसीना-पसीना हो गया। एकबार तो ऐसा घबराया कि कहीं मैं शरीर ही नहीं छोड़ दूं। इसका सबको पता लग गया। गवाड़ी की औरतें इकट्ठी हो गई। एक ने कहा, इसे रावले में गवरी हो रही है सो वहां ले जाया जाय, ठीक हो जायेगा।

मां ने सुनते ही मुझे अपने कंधे पर उठाया और रावले ले गई। वहां शेर का अंतिम दृश्य था। एक आदमी पूरे शरीर पर शेर जैसे टपोकड़े लिए था। उसकी जीभ बाहर निकली लपलपा रही थी। वह बड़ी डरावनी सूरत लिए धनुषाकार बना हुआ धरती पर रोमांचित बना हुआ था। मां ने मुझे उसके नीचे से निकाला और वहीं मेरा बुखार कम पड़ता-पड़ता घर आया तब तक तो हवा ही हो गया।

मेरे गांव के पास के मातृ-स्थान बड़े जाग्रत रहे। ऊंठाला की लोकमाता चेचक की खास देवी है। अब ऊंठाला नाम बदलकर वल्लभनगर हो गया पर गीतों में ऊंठाला राणी जीवित है। चेचक के प्रति अब वह धारणा नहीं रही तब भी लोग रोगी को वहां धोकते हैं, बोलमा बोलते हैं। बीमारी दूर होने पर मनौती पूरते हैं। सन् 1952 में मेरी आठवीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षा का केन्द्र वहीं था। तब वहां का कलाकंद बहुत प्रसिद्ध था। एक ही दुकान और वह भी सीमित मात्रा में बनाता था। कहते हैं, आज भी वहां का कलाकंद उसी परिवार का वंशधर उसी सीमा में कलाकंद बना रहा है।

मेवाड़ में आवरी माता का स्थान लकवे के रोगियों के लिए दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। वहां इस बीमारी का व्यक्ति जाता ही जाता है। कहते हैं, आड़ा रोगी जाता है, खड़ा-बैठा होकर लौटता है। एलवा माता तुतलों को ठीक करती है तथा विद्या देती है। मैंने सब माताएं धोकी हैं।

भारतीय लोककला मंडल में शीशोदा ठिकाने के मानजी चौकीदार थे। उनके पास कई बीमार आते रहते थे। वे कई तरह का इलाज जानते थे। मैंने बहुत सारी बीमारियों का इलाज करते भी, झाड़ा डालते भी, फंद-फांद निकालते भी उन्हें देखा। एकबार कलामंडल के व्यवस्थापक रूपलाल शाह अस्वस्थ हो गये। देशी और डाक्टरी इलाज तो करवाया ही, अड़क इलाज भी कराया।

मानसिंहजी ने बताया कि एकदिन वे स्वयं उनके पहनने का जब्बा लेकर कुंवारिया गांव में रह रही एक बनिया महिला के पास गये। उसने वह जब्बा सूंघकर बताया कि रोगी फंद में आ गया है। उसने जो इलाज बताया, मानजी के हाथों वह पूरा किया गया और शाहजी स्वस्थ हो गये।

मेरी उत्सुकता मानजी से पूरी जानकारी लेने की थी। मैंने खोद-खोद कर उनसे पूछा तो उन्होंने स्पष्ट किया कि बापू, ये सब गुप्त विद्या है। किसी को कहने की नहीं है। चौड़े करने से विद्या जाती रहती है। इसलिए चुपचाप लोग इलाज कराते हैं। बाजवक्त घर वालों को और रोगी तक को इसकी भनक नहीं लगने दी जाती है। यह दिन 4 जून 1976 का था।

-म. भा.

भीम एप्प ने बदला ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक का जीवन

उदयपुर। शिक्षक रामलाल चौरसिया आज अपने विद्यार्थियों और स्थानीय निवासियों के बीच भीम एप्प का प्रचार कर रहे हैं। इस एप्प ने उनके बैंकिंग के काम को बहुत आसान बना दिया है। श्री चौरसिया बताते हैं कि वे इस एप्प के फायदे दूसरों को भी बता रहे हैं, ताकि वो सब भी इस एप्प का इस्तेमाल करें।

इस एप्प के से पूर्व सवाई माधोपुर के खंडर ब्लॉक गांव में छयालीस वर्षीय शिक्षक श्री चौरसिया को अपनी नजदीकी शाखा में चैक जमा करने के लिए स्कूल से छुट्टी लेकर 40 किलोमीटर दूर जाना पड़ता था। यह चेक कोटा ज़ोन जाकर क्लियर होने में चार दिन का समय लेता था लेकिन भीम एप्प डाउनलोड करने के बाद उन्होंने कुछ ही सेकंड में यूपीआई आईडी का प्रयोग करेक अपना फंड ट्रांसफर कर दिया। अब उन्हें अपने बैंक खाते और आईएफएस कोड को भी याद नहीं रखना पड़ता है, जिनका उपयोग ऑनलाईन बैंकिंग के दौरान फंड ट्रांसफर के लिए होता है। इस प्लेटफॉर्म द्वारा पैसे का अतिशीघ्र ट्रांसफर नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) द्वारा किया जाता है।

BHIM
BHARAT INTERFACE FOR MONEY

भीम एप्प इस्तेमाल में बहुत आसान है। एन्ड्रॉयड यूज़र्स गूगल प्ले स्टोर से भीम एप्प डाउनलोड कर सकते हैं। आईफोन यूज़र्स को यह एप्प एप्पल एप्प स्टोर पर मिलेगा। एक बार डाउनलोड हो जाने के बाद इस एप्प में यूज़र्स को अपना बैंक खाता डालना होता है और अपने डेबिट कार्ड द्वारा यूपीआई पिन सेट करनी होती है। इसके बाद वो इस एप्प के माध्यम से विनिमय कर सकते हैं। इस एप्प का इस्तेमाल करते वक्त दो चीजें याद रखनी होंगी। पहला अपने मोबाईल नंबर को बैंक खाते से लिंक करना होगा और फिर विनिमय करते वक्त बैंक खाते से लिंक किए गए मोबाईल नंबर की सिम कार्ड को मोबाईल हैंडसेट में इस्तेमाल करना होगा। भीम एप्प का इस्तेमाल करके बैंक शाखा में जाए बिना पैसे भेज या निकाल सकते हैं। यह एप्प मुख्य क्षेत्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध है। यूज़र्स तत्काल पैसे भेजने या प्राप्त करने के लिए अपने फोन संपर्कों में से बेनेफिशियरी चुन सकते हैं। भीम एप्प ने मर्चेंट लोकेशंस पर पैसे का भुगतान करना भी आसान बना दिया है। इसके लिए क्यूआर कोड के माध्यम से 'स्कैन एण्ड पे' विकल्प को इनेबल करना होगा।

वोडाफोन एम-पैसा रीचार्ज पर फुल टॉकटाईम

उदयपुर। वोडाफोन एम-पैसा प्रीपेड उपभोक्ताओं के लिए एक अनूठी पेशकश 'एवरी टाइम फुल टॉक टाईम' लेकर आया है। प्रीपेड उपभोक्ता वोडाफोन की मोबाइल वॉलेट सेवा एम-पैसा के माध्यम से 30 से 200 रुपये तक के रीचार्ज पर फुल टॉक टाईम का फायदा पा सकते हैं। इतना ही नहीं उपभोक्ता चाहे जितनी बार भी रीचार्ज करें, हर बार इस ऑफर का लाभ उठा सकते हैं। उपभोक्ता एक ही दिन या एक ही सप्ताह में कितनी बार भी रीचार्ज करें, हर बार उन्हें फुल टॉक टाईम का फायदा मिलेगा।

वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि कोई भी व्यक्ति मुफ्त एम-पैसा ऐप डाउनलोड कर सकता है और किसी भी समय, किसी भी स्थान पर ऐप के ज़रिए रीचार्ज कर इस ऑफर का लाभ उठा सकता है। उपभोक्ता अपने स्मार्टफोन पर यूएसएसडी के माध्यम से *400 # डायल करके रीचार्ज कर सकते हैं और वोडाफोन के इस अनूठे ऑफर 'एवरी टाईम फूल टॉक टाईम' का लाभ उठा सकते हैं।

इस एक्सक्लुज़िव ऑफर से रीचार्ज कराने पर उपभोक्ताओं को रीचार्ज राशि पर 18-25 फीसदी तक अतिरिक्त टॉक टाईम का फायदा भी मिलेगा। श्री बेदी ने कहा कि बड़ी संख्या में उपभोक्ता आज मोबाइल वॉलेट का इस्तेमाल करने लगे हैं और हमने पाया है कि एम-पैसा ऐप के माध्यम से मोबाइल रीचार्ज करने वाले उपभोक्ताओं की संख्या भी तेज़ी से बढ़ रही है। इसी के मद्देनज़र हम उपभोक्ताओं के लिए यह ऑफर लेकर आए हैं जिसके माध्मय से वे 30 रुपये से अधिक के हर रीचार्ज पर फुल टॉक टाईम का लाभ उठा सकेंगे।

सैमसंग ने लॉन्च किया गैलेक्सी नोट8

उदयपुर। सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स ने अपने फ्लैगशिप स्मार्टफोन गैलेक्सी नोट8 को भारत में लॉन्च किया है।

सैमसंग ने इस मौके पर कुछ हफ्तों में 'मेक फॉर इंडिया इनोवेशन वाले बिक्सबी वॉइस कैपेबिलिटी को पेश करने की घोषणा की। बिक्सबी गैलेक्सी नोट8, गैलेक्सी एस8 और एस8 + डिवाइसिस में उपलब्ध होगा। सैमसंग साउथवेस्ट एशिया के प्रेसिडेंट एवं सीईओ एचसी हॉन्ग ने कहा कि गैलेक्सी नोट8 में उपभोक्ताओं को एक बड़ी इंफिनिटी डिस्प्ले, मिलेगी और एस पेन जो बेहतर तरीके से कम्यूनिकेट करने का काम करेगा। इसमें डुअल ऑप्टिकल स्टेबिलाइज़ेशन (ओआईएस) के साथ सैमसंग का अब तक का सबसे बेहतर डुअल कैमरा भी है, जो किसी भी परिस्थिति में शानदार तस्वीरें लेगा।

सैमसंग शानदार नोट सीरीज़, क्रांतिकारी मोबाइल पेमेंट सर्विस सैमसंग पे और सैमसंग के डिफेंस-ग्रेड सिक्योरिटी प्लेटफॉर्म सैमसंग नॉक्स के साथ आता है। सैमसंग इंडिया के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, मोबाइल बिजनेस, असिम वारसी ने कहा कि शानदार इंफिनिटी डिस्प्ले, बेहतर एस पेन और ट्रू डुअल कैमरे के साथ आने वाले गैलेक्सी नोट8 को खासतौर पर उन लोगों के लिए डिज़ाइन किया गया है जो बड़े काम करना चाहते हैं। गैलेक्सी नोट8 का स्क्रीन ऑफ मेमो फोन को खोले बिना 100 पेजेज़ तक के नोट्स लेने की अनुमति देता है। गैलेक्सी नोट8 का बेहतर एस पेन एक पर्सनल ट्रांसलेटर और कंवर्टर की तरह काम करता है, एस पेन की अनुवाद सुविधा झट से सिर्फ अलग-अलग शब्द ही नहीं, बल्कि पूरे वाक्यों का अनुवाद कर देती है, जिससे करीब 71 भाषाओं में हमें कन्टेंट मिल जाता है।

एचडीएफसी बैंक द्वारा इज़ीईएमआई लॉन्च

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने डेबिट काड्र्स पर इज़ी ईएमआई प्रारंभ करने की घोषणा की है। एचडीएफसी बैंक के ग्राहक खरीदे गए सामान का भुगतान अपने डेबिट कार्ड से आसान मासिक किश्तों में कर सकेंगे। ग्राहकों को 24/7 पूर्व अनुमोदित ऋण राशि उपलब्ध रहेगी और डेबिट कार्ड द्वारा आसान मासिक किश्तों में खरीद की यह पूरी प्रक्रिया बहुत आसान व पेपरलेस होगी।

एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड, कार्ड पेमेंट प्रोडक्ट्स, मर्चेंट एक्वायरिंग सर्विसेस एवं मार्केटिंग, पराग राव ने कहा कि इस सुविधा का लाभ लेने के लिए ग्राहकों को ऑफलाईन एवं ऑनलाईन मर्चेंटों से सामान खरीदने के लिए भुगतान करने वक्त अपने क्रेडिट कार्ड को स्वैप कराके इज़ीईएमआई विकल्प चुनना होगा। ऋण प्राप्त करने वाले ग्राहकों को बैंक के द्वारा ईमेल तथा एसएमएस द्वारा सूचित किया जाएगा। ग्राहक इस इज़ी ईएमआई ऑफर का उपयोग फेस्टिवल सेल के दौरान बड़ी ईकॉमर्स साईट्स से खरीद करने के लिए कर सकते हैं। डेबिट काड्र्स पर इज़ी ईएमआई ऑफर का प्रयोग कंज़्यूमर ड्यूरेबल्स, कंज़्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स, मोबाईल, फर्नीचर, फिटनेस उपकरण खरीदने, फ्लाईट या ट्रेन के टिकट खरीदने तथा मेडिकल उपचार प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। इज़ी ईएमआई के द्वारा कम से कम 10,000 रु. की ऋण राशि ली जा सकती है।

आसियान-भारत वार्ता संबंधों की 25वीं वर्षगांठ का जश्न उदयपुर में

-डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों के संगठन (आसियान) और भारत के वार्ता संबंधों की 25वीं वर्षगांठ का दस दिवसीय ऐतिहासिक जश्न झीलों की नगरी उदयपुर के 'द अनंता' में 21 से 29 सितंबर तक मनाया जाएगा। कला के जरिए वार्ता संबंधों की प्रगाढ़ता व उसके महत्व को दर्शाने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय और सहर के तत्वावधान में यह आयोजन होगा। आसियान के सदस्य देशों में इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलिपींस, मलेशिया, ब्रुनेई, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओ पीडीआर, म्यांमार और वियतनाम शामिल हैं।

सहर के फेस्टिवल डायरेक्टर संजीव भार्गव ने बताया कि 10 आसियान देशों के नामचीन कलाकार शिविर में हिस्सा लेने आएंगे। इनमें चैन सोपहॉर्न (कंबोडिया), इकरो अखमद इब्राहिम लैली सुब्खी (इंडोनेशिया), कान्हा सिकोउनावोंग (लाओ पीडीआर), मोहम्मद शहरूल हिशाम बी. अहमद तरमीजी (मलेशिया), थेट नाइंग (म्यांमार), नाफाफोंग कुराए (थाईलैंड) और गुएन घिया फुओंग (वियतनाम), भारतीय कलाकार बिनॉय वर्गीस, फरहाद हुसैन, कलाम पटुआ, कियोमी लाइश्राम मीना देवी, महावीर स्वामी, समींद्रनाथ मजूमदार और तन्मय समांता के साथ मिलकर गहरे सांस्कृतिक संबंध को दर्शाने वाली शानदार कलाकृतियां बनाएंगे।

शिविर में संस्कृति एवं कला का आदान-प्रदान होगा। इस शिविर में बनाई गई 20 पेंटिंग्स के कलेक्शन की विशेष प्रदर्शनी में रखा जाएगा, जिसका उद्घाटन नई दिल्ली में जनवरी 2018 में होने वाले आसियान-भारत सम्मेलन के दौरान माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी करेंगे। यह शिविर 'ओशन ऑफ ऑपर्च्युनिटी' थीम पर आधारित है, जो करीब 2000 वर्षों से भारत व दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के सभ्यता व संस्कृति के उस रिश्ते को बिलकुल सटीक ढंग से दर्शाता है, जो मैरीटाइम सहयोग के जरिए उनके बीच हैं। आसियान और भारत हमेशा एक-दूसरे के लिए सहयोग व विश्वास के स्तंभ रहे हैं और आज वे संपूर्ण विकास की राह पर साथ-साथ चल रहे हैं।

संजीव भार्गव ने बताया कि कला प्रारूपों की बेहद समृद्ध धरोहर और परंपरा से भरपूर आसियान देशों के विजुअल कलाकारों का एक साथ आना बहुत दुर्लभ अवसर है। यह शायद पहला अवसर है जब विभिन्न देशों से आने वाले ये कलाकार एक ही मंच पर प्रतिभाशाली भारतीय कलाकारों के साथ काम करेंगे और एक ही थीम पर पेंटिंग्स बनाएंगे। आसियान-भारत शिविर में पेंटिंग के विभिन्न स्टाइलों - कंटेंपररी, मॉडर्न, ट्रेडिशनल, इंप्रेशनिस्ट की पृष्ठभूमि से आने वाले कलाकार एक-दूसरे के साथ बातचीत करेंगे, साथ रहेंगे और ऐसी रचनाएं करेंगे, जो दोनों संस्कृतियों के मिलन को दर्शाएं। आसियान पहचान के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक कलाकार इस शिविर में अपने निवास के दौरान एक ऐसी रचना करेगा, जो उनकी संस्कृति एवं इतिहास को दर्शाएगी। विभिन्न जॉनर के प्रतिष्ठित पेंटर्स इन कलाकारों का मार्गदर्शन करेंगे। कलाकारों के बीच चर्चाएं होंगी, जो उनके संवाद और एक-दूसरे की क्षमता व कला प्रैक्टिस को समझने में मददगार होंगी। इस आयोजन में कई प्रतिष्ठित वक्ता उपस्थित होंगे, जो कलाकारों के साथ विभिन्न विषयों पर बातचीत करेंगे। इस दौरान प्रतिभागियों को भी अंतरसंकाय आदान-प्रदान का अवसर मिलेगा, जब परफॉर्मिंग कलाकार जैसे डॉ. अन्वेषा महंत सत्तरिया पर एक लेक्चर-डेमो का आयोजन करेंगी और विजुअल कलाकारों के साथ बातचीत करेंगी। शिविर के तहत एमएमपीएस स्कूल, उदयपुर के छात्रों के साथ एक वर्कशॉप का आयोजन होगा, जहां वरिष्ठ कलाकार छात्रों के साथ बातचीत कर स्कूलों में कला शिक्षा को लेकर नया रवैया विकसित करने की कोशिश करेंगे। आसियान देशों और भारत के मूल्यों व परंपराओं की गहरी समझ और जागरूकता को बढ़ावा देने के पीछे इस कैंप का उद्देश्य प्रतिभागियों को उनके देश व शहरों में लौटने पर उन्हें आसियान और भारत का सांस्कृतिक एंबेसडर बनाना है।

जीवन सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं : मिश्रा

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल के चीफ सेल्स एंड डिस्ट्रीब्यूशन प्रणव मिश्रा ने 'इंपोर्टेंस ऑफ टर्म इंश्योरेंस' विषय पर परिचर्चा में कहा कि जीवन बीमा के अहम मसले पर अब देशवासियों को और अधिक

जागरूक करने व अधिकाधिक लोगों को इसके दायरे में लाने की आवश्यकता है। हाल में स्विस आरई की ओर से प्रकाशित रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत के लिए 'मॉर्टेलिटी प्रोटेक्शन गैप' वर्ष 2014 में करीब 550 लाख करोड़ रूपए था जो 2004 से 2014 के बीच 11 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ा। सामान्य अर्थों में समझें तो हर भारतीय परिवार को जिसे 100 रूपए का बीमा सुरक्षा कवर चाहिए था, वहां पर सिर्फ 8 रूपए बचत और बीमा के लिए रखे जा रहे हैं। इस तरह करीब 92 रूपए का मोर्टेलिटी प्रोटेक्शन गैप है। 2014 में भारत में प्रत्येक कार्यशील व्यक्ति और उस पर आश्रितों का सिर्फ 1.3 लाख रूपए का बीमा था जो विकसित देशों के मुकाबले काफी कम है। व्यक्तिगत सजगता और पारिवारिक, सामाजिक व सामूहिक स्तर पर जागरूकता के माध्यम से इस बीमा अंतराल को पूरा किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि अब वक्त आ गया है कि हर भारतीय यह समझें कि उसका जीवन, उसकी सुरक्षा चिंताएं तथा भविष्य की पारिवारिक सुरक्षा योजनाओं को सर्वोच्च प्राथमिकता स्तर पर रखा जाए। भारतीयों की आय लगातार बढ रही है और इसी के साथ उनकी वित्तीय सुरक्षा का स्तर भी। इसका प्रमाण यह है कि जीवन बीमा की स्वीकार्यता अब बहुत बढ़ गई है। वित्तीय वर्ष 2011 में जीडीपी के मुकाबले 55.8 प्रतिशत बीमित राशि थी जो वित्तीय वर्ष 2017 में 70 प्रतिशत तक बढ़ गई। निचले वर्ग को भी कवर करने वाली भारत सरकार की बीमा योजनाओं से स्थिति में काफी सुधार आ गया है।

उन्होंने कहा कि क्षणभंगूर एवं अनिश्चितताओं से भरे जीवन को संवारने के लिए हर कामकाजी व्यक्ति को अपनी पूंजी, खर्चे, देनदारियों तथा भविष्य के पारिवारिक, स्वास्थ्य प्रबंधन, जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए पूरे परिवार को अधिकतम लाभ वाला बीमा जरूर करवाना चाहिए। विडंबना है कि हम कार खरीदते समय उसे पूरी तहर से इंश्योर्ड करवा कर ही आश्वास्त होते हैं मगर अपने जीवन के प्रति हमारा नजरिया थोड़ा सा कंजूसी भरा होता है। इसे बदलने का वक्त आ गया है। टर्म प्लान में दी गई एकमुश्त राशि से किसी संकट के समय भी परिवार के सदस्य बिना किसी वित्तीय दायित्व के आसानी से अपना जीवन जी सकते हैं। 16 वर्ष की समझ के बाद टर्म प्लान्स के प्रीमियम 50 प्रतिशत से भी कम हो गए हैं। 8 से 10 हजार रूपए के प्रीमियम से कोई भी व्यक्ति एक करोड रूपए का बीमा प्राप्त कर सकता है। दुर्भाग्य है कि व्यक्ति कार जैसी चीजों के लिए तो दोगुना पैसा देने को तैयार हो जाता है, लेकिन जीवन बीमा खरीदने में उस उत्साह के साथ रूचि नहीं दिखाता। हमें बीमा करवाते समय हार्ट और कैंसर से जुड़े मुद्दों पर ज्यादा फोकस करना चाहिए।

श्री मिश्रा ने कहा कि जीवन बीमा आपकी मौजूदा आय, खर्च, आपके कार्यशील रहने के वर्ष, बाकी बचे दायित्व जैसे आवास ऋण, बच्चे की पढ़ाई आदि को ध्यान में रखते हुए लेना चाहिए। इस तरह पॉलिसीधारक इस बात के लिए आश्वस्त हो सकता है कि उसकी गैर मौजूदगी में भी उसका परिवार वित्तीय रूप से सुरक्षित रहेगा। आदर्श स्थिति यह है कि यदि आपकी आय, खर्च और दायित्व बढ़ गए हैं तो लिए गए जीवन बीमा कवर की फिर से समीक्षा करनी चाहिए। सुनिश्चित नियम यह है कि 40 वर्ष तक की उम्र के व्यक्ति को अपनी वार्षिक आय के 20-30 गुना तक का बीमा कराना चाहिए। 40 से 50 वर्ष की उम्र के व्यक्ति को वार्षिक आय का 10-20 गुना और 50 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्ति को वार्षिक आय का 5-10 गुना बीमा कवर चाहिए।

इंटेक्स स्मार्ट वर्ल्ड स्टोर का शुभारंभ

उदयपुर। झीलों की नगरी उदयपुर में बुधवार को अग्रणी मोबाईल हैंडसेट एवं कंज़्यूमर ड्यूरेबल्स ब्रांड, इंटेक्स टेक्नॉलॉजीज़ के पहले स्मार्ट वर्ल्ड स्टोर का शुभारंभ विशाल

मलिक, डीजीएम, रिटेल, इंटेक्स द्वारा किया गया। इस मौके पर दिनेश मेहता, हर्ष मेहता एवं कंपनी के अन्य अधिकारियों भी मौजूद थे।

इस अवसर पर आयोजित प्रेसवार्ता में विशाल मलिक, डीजीएम, रिटेल, इंटेक्स टेक्नॉलॉजीज़ ने बताया कि हमें इस खूबसूरत शहर में अपने पहले स्टोर का उद्घाटन करने की काफी खुशी है। 258 वर्गफीट में फैला यह स्टोर इंटेक्स टेक्नॉलॉजीज़ का 135 वां एवं उदयपुर में खुलने वाला पहला स्टोर है। इसके अलावा स्मार्ट वर्ल्ड अन्य स्टोर्स में सात जयपुर में तथा बीकानेर, भीलवाड़ा और कोटा में एक-एक स्टोर हैं। अप्रैल, 2015 में शुरु करके अपनी दो सालों से अधिक समय की यात्रा में इंटेक्स स्मार्ट वर्ल्ड पूरे भारत में 25 राज्यों के 90 से अधिक शहरों में अपना विस्तार कर चुका है। अपनी शुरुआत से हर 5 दिनों में एक स्मार्ट वर्ल्ड स्टोर्स खुल रहा है।

उन्होंने बताया कि ग्राहकों ने स्मार्ट वर्ल्ड के कॉन्सेप्ट और बिज़नेस मॉडल को बहुत पसंद किया है। स्मार्ट वर्ल्ड स्टोर के पास प्रशिक्षित स्टाफ है, जो ग्राहकों को शिक्षा, सुविधा और बहुमूल्य अनुभव प्रदान करेगा। इसका लक्ष्य अपनी रिटेल पहुंच मजबूत बनाना और ग्राहकों को बेहतर अनुभव प्रदान करना है।

ये एक्सक्लुसिव आउटलेट इंटेक्स उत्पादों की व्यापक श्रृंखला का अनुभव लेने के लिए सिंगल टच प्वाईंट के रूप में काम करते हैं। यहां प्रशिक्षित स्टाफ उत्पादों का विस्तृत डेमो प्रदान करता है।

एक क्लिक से लाइव देखेंगे घर-दफ्तर

उदयपुर। घर और प्रतिष्ठान की सुरक्षा चिंताओं तथा दैनिक रीयल टाइम मॉनिटरिंग को आसान बनाते हुए भारत की मशहूर सिक्युरिटी सॉल्युशन्स प्रदाता गोदरेज सिक्युरिटी सॉल्युशस (जीएसएस) ने दो बेहद उपयोगी व क्रांतिकारी उत्पादों ईवीए और सीथ्रूप्रो को यहां होटल रेडिसन ब्लू में लॉन्च किया।

गोदरेज सिक्युरिटी सॉल्युशन्स डिविजन के एसोसिएट वाइस प्रेसिडेंट एवं ग्लोबल हेड-मार्केटिंग, सेल्स एवं इनोवेशन मेहरनोश पिठावाला और नॉर्थ वेस्ट जोनल हेड ईश्वर पहलाजानी ने बताया कि ईजी व्यूइंग एव्हरीव्हेयर या ईवीई लोगों के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। अपने घर से दूर विदेशों में बैठकर भी स्मार्ट फोन के जरिये लाइव स्ट्रिमिंग करते हुए घर की लाइव पिक्चर देख सकेंगे, घर के सदस्यों से वार्तालाप कर सकेंगे, निर्देश दे सकेंगे। ईवीई सिरीज से ईवीई मिनी, ईवीई क्यूब और ईवीई पीटी मोशन सेंसिंग पर यह सब संभव होगा। इसमें लगे एसडी कार्ड से रिकॉर्डिंग भी होगी और लाइव स्ट्रिमिंग भी। कोई भी अवांछित हरकत होने पर फोन पर तुरंत नोटिफिकेशन्स आ जाएंगे।

इसकी कीमत स्मार्टफोन से कम केवल 5 हजार ही रखी गई है। इसे इंस्टॉल करना इतना आसान है कि बच्चे और युवा भी कुछ दूरभाष निर्देश देकर यह आसानी कर सकते हैं। कैमरों के फंक्शंस स्मार्टफोन एप से नियंत्रित हैं। आप चाहें तो दूर बैठे कैमरे को मूव कर कई एंगल्स पर भी लाइव स्ट्रिमिंग कर सकते हैं। इस डिवाइस को सफर में साथ ले जा सकते हैं, न तार का झंझट है व स्टोरेज डिवाइस की परेशानी।

इसी के साथ सीथ्रूप्रो वीडियो डोर फोन्स का शानदार नवीनतम रूप है। गृहस्वामी के घर पर नहीं होने या दूर रहने की स्थिति में दरवाजे पर खड़े आगंतुक को देखने और उससे बात करने सुविधा प्रदान करता है। स्मार्टफोन एप से इसे नियंत्रित किया जा सकता है, वार्तालाप से निर्देश दिए जा सकते हैं। दोनों ही डिवाइस के डेटा पासवर्ड से सुरक्षित रहते हैं। इसके चोरी हो जाने पर भी तुरंत उपभोक्ता को चेतावनी संदेश भेज दिया जाता है, साथ ही उसका डेटा भी सुरक्षित कर दिया जाता है। पिठावाला ने बताया कि अब घर में न चोरी की चिंता रहेगी, ना ही घर वालों की असुरक्षा का डर। गोदरेज ने ग्राहकों के फीडबेक के आधार पर नये खोजपरक उत्पादों की यह व्यापक श्रृंखला लॉन्च की है। ये सभी उम्र और पृष्ठभूमि के ग्राहकों के लिये कैटेगरी को प्रासंगिक, सहज एवं किफायती बना रहे हैं।

कंप्यूटर युग में भी परचम लहरा रहा है कागज उद्योग : सिंघानिया

उदयपुर। जेके पेपर्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हर्षपति सिंघानिया ने कहा कि तमाम चुनौतियों के बावजूद देश में पेपर इंडस्ट्री का भविष्य उज्जवल है। देश के आर्थिक सुधारों के दीर्घकालीन परिवर्तन और उनके प्रभाव निश्चित हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के मौलिक तत्व मजबूत हैं एवं विश्व की सबसे तेजी से बढ़ने की संभावना रखती है। अब व्यापार के तौर तरीकों व शिक्षा के स्तर में भी बदलाव होगा। ऐसे परिदृश्य में भारत में पेपर की मांग सबसे ज्यादा बढ़ने की संभावना है। जीएसटी सबके लिए अच्छा है और सभी को इसका पालन कर सरकार को सहयोग देना चाहिये। आने वाले समय में जीएसटी की दरों में कमी की भी संभावनाएं हैं। ये विचार श्री सिंघानिया ने आगरा में 7-8 सितंबर को जेपी पैलेस में आयोजित जे. के. पेपर लि. की दो दिवसीय होलसेलर कांफ्रेंस में व्यक्त किए। कांफ्रेंस को कंपनी के पूर्णकालीक निदेशक ओ. पी. गोयल, प्रेसिडेंट ए.एस. मेहता, संतोष वाकलू, सैकत बासू सहित अन्य पदाधिकारियों ने संबोधित किया। कांफ्रेंस में देशभर के 250 से अधिक होलसेलरों ने भाग लिया।

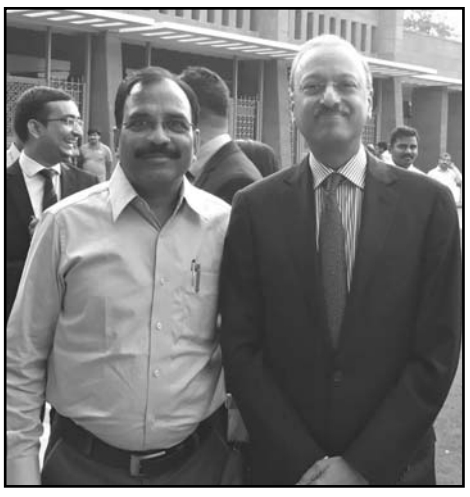

उदयपुर के प्रतिनिधि डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि अपने ओजस्वी भाषण में श्री सिंघानिया ने कहा कि पेपर आयात सबसे बड़ी चुनौती है। हमें स्वदेशी पेपर को बढ़ावा देना चाहिए। प्लांटेशन से न केवल वातावरण में सुधार होता है बल्कि काफी लोगों को रोजगार मिलता है। पेपर उद्योग रोजगार केन्द्रित है और बड़ी मात्रा में लोगों की जीविका इससे चलती है।

प्रेसिडेंट ए.एस. मेहता ने कहा कि अभी बाजार अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है। हम सबको इसका मुकाबला करना ही होगा। कागज उद्योग देश में 6-7 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रहा है। कम्प्यूटर के युग में भी कागज उद्योग अन्य उद्योगों से बढ़त पर है व स्थिरता लिए हुए है। श्री मेहता ने कहा कि अन्य उद्योग के मुकाबले इस उद्योग में प्रदूषण कम है। देशभर में 10 लाख टन से ज्यादा डिटरजेंट बनता है, जो अंत में पानी में ही घुलता है जबकि कागज उद्योग प्रदूषण को संरक्षित-सुरक्षित करता है। जहां तक लकड़ी का सवाल है तो केवल 7 प्रतिशत लकड़ी ही उद्योगों में काम आती है, इसमें से भी केवल 3 प्रतिशत लकड़ी कागज बनाने में काम आती है जबकि 93 प्रतिशत लकड़ी जलाने यथा गांवों आदि में रसोई आदि में काम आती है। यह होव्वा बना रखा है कि कागज उद्योग लकड़ी को उपयोग कर जंगलों को खत्म करता जा रहा है। श्री मेहता ने बताया कि पिछले 7 साल में एक लाख हेक्टेयर प्रतिवर्ष कागज उद्योग वृक्षारोपण कर रहा है।

कॉन्फ्रेंस में कई सत्रों में उद्योग की दशा और दिशा तथा भविष्य की योजनाओं, नवाचारों आदि पर मंथन किया गया। स्वागत भाषण राजेश कपूर ने दिया। डिजिटल ट्रांसफोर्मेशन पर श्री अशोक लाल्ला ने विस्तार से विचार रखे। ओपन हाउस सेशन में सवाल-जवाब के दौर चले। दिनेश जैन व श्री खन्ना के भी विशेष सत्र हुए। धन्यवाद मनोज अग्रवाल ने दिया।

SAI TIRUPATI UNIVERSITY

GNM | **B.Sc., M.Sc. Nursing** | **BPT**

ADMISSION OPEN FOR 2017-2018

VENKTESHWAR SCHOOL OF NURSING
(RECOGNIZED BY INDIAN NURSING COUNCIL, RAJASTHAN NURSING COUNCIL, GOVT. OF RAJASTHAN)

G.N.M.
DURATION : 3 YEARS
ELIGIBILITY : 10+2 in any stream with mini. 40% marks

VENKTESHWAR COLLEGE OF NURSING
(RECOGNIZED BY INDIAN NURSING COUNCIL)

B.Sc. Nursing
DURATION : 4 YEARS
ELIGIBILITY : 10+2 in Science(Bio.) with mini. 45% marks

M.Sc. Nursing
DURATION : 2 YEARS
ELIGIBILITY : B.Sc.(nursing) with aggregate mini. 55% marks

VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY

BPT
DURATION : 4.5 YEARS
ELIGIBILITY : 10+2 in Science (Bio.) with mini. 45 % marks

Clinical exposure in its own attached 600 bedded Multispecialty Hospital (Pacific Institute of Madical Sciences)

PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
Ambua Road, Umarda Tehsil - Girwa, Udaipur (Raj.)
Contact us : 0294-3010015, 9587890082, 9587890081
EMAIL ID : info@saitirupatiuniversity.ac.in
WEB : www.vsnursing.ac.in www.saitirupatiuniversity.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित।
सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, **पंजीयन संख्या - RAJHIN/2016/72902,** Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।